Fortnightly per copy Rs. 4/-

ओ३म्

18th January 2023

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Website : http://www.aryasabhaapts.org

Narendra Bhavan Telephone : 040 24760030

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

आजादी के महानायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

३ फरवरी १९२८ को जब साइमन कमीशन भारत आया था तब पूरे देश में इसके खिलाफ आग भड़की हुई थी। तब लाला लाजपत राय ने लाहौर में इस आंदोलन का नेतृत्व किया था। उनके आंदोलन से अंग्रेज सरकार हिल गई। अंग्रेजों ने विरोध करने वालों पर लाठियां बरसाई, इसी विरोध के दौरान लाला लाजपत राय १७ नवंबर १९२८ को शहीद हो गए थे।

साइमन आयोग सात ब्रिटिश सांसदो का समूह था, जिसका गठन ८ नवम्बर १९२७ में भारत में संविधान सुधारों के अध्ययन के लिये किया गया था और इसका मुख्य कार्य ये था कि मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार कि जांच करना था। ३ फरवरी १९२८ में साइमन कमीशन भारत आया। भारतीय आंदोलन कारियों में साइमन कमीशन वापस जाओ'' के नारे लगाए और जमकर विरोध किया। साइमन कमीशन के विरुद्ध होने वाले इस आंदोलन में कांग्रेस के साथ साथ मुस्लिम लीग ने भी भाग लिया। साइमन आयोग (कमीशन) नाम इसके अध्यक्ष सर जान साइमन के नाम पर रखा गया था । साइमन आयोग के मुख्य सुझाव निम्नलिखित थे :- १.भारत में एक संघ की स्थापना हो जिसमें ब्रिटिश भारतीय प्रांत और देशी रियासतें शामिल हों।

२. केन्द्र में उत्तरदायी शासन की व्यवस्था हो।

३. वायसराय और प्रांतीय गवर्नर को विशेष शक्तियाँ दी जाएं।

४. एक लचीले संविधान का निर्माण हो।

-शेष पृ. ३ पर

विकास वाले विपरीत मंजर

मुकेश भारद्वाज

पहाड़ भांप रहा था
मिरे इरादे को
वो इसलिए भी कि
तेशा मुझे उठाना था
-अख्तर शुमार

सम्मेद शिखर। पिछले दिनों जब जैन समुदाय के लोग सड़कों पर उतरे, तो यह नाम पूरे देश में गूंजने लगा। देश के जिस भी हिस्से में जैन समुदाय रहता है, वहां लोग सड़कों पर निकले और सम्मेद शिखर को पर्यटक-स्थल बनाने की झारखंड सरकार की योजना का पुरजोर विरोध किया। समुदाय से जुड़े मुनियों ने आमरण अनशन शुरू किया।

वर्तमान में सम्मेद शिखर का पर्यटनस्थल की तरह विकास नहीं हुआ है। पर्यटकों के लिए बहुत सुविधाएं नहीं हो पाने के कारण आस-पास के लोग सप्ताहांत मनाने वहां नहीं पहुंच पाते हैं। वहां मुख्यतः जैन तीर्थयात्री जाते हैं जो इस पहाड़ी को मोक्षस्थली मानते हैं।

पारसनाथ की पहाड़ी पर स्थित सम्मेद शिखर को सरकार ने राजस्व कमाने के लिए मुफीद समझा और उसे पर्यटनस्थल बनाने के लिए प्रस्ताव पेश कर दिया। इस फैसले के बाद पूरा जैन समुदाय आंदोलनरत हो गया। समुदाय का आरोप था कि पर्यटकस्थल बना देने से वहां की पवित्रता खत्म हो जाएगी। जैन समुदाय के आंदोलन को देखते हुए केंद्र सरकार को सम्मेद शिखर पर पर्यटन गतिविधियां बढ़ाने की योजना को रोकने का आदेश देना पड़ा। यह दूसरी बात है कि अब आदिवासी समुदाय वहां पर अपना हक मांग रहे हैं।

जब जैन समुदाय सम्मेद शिखर को सरकारी योजना से बचाने की गुहार कर रहा था उसी वक्त पहाड़ से चीखें आने लगी कि सरकार ने जोशीमठ को बचाने में बहुत देर कर दी। वहां पहाड़ों से लेकर खेतों और घरों तक में आई दरार के बाद लोगों को अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

जोशीमठ को लेकर लंबे समय से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान समेत कई संस्थाओं ने सरकार को आगाह किया था। आज जो हुआ, वह कब और कैसे होगा इसके बारे में शोध-पत्रों में आशंका जताई जा चुकी थी। यह तो 1976 की बात है जब गढ़वाल जिले के उपायुक्त महेश चंद्र मिश्रा की अगुआई में जोशीमठ में भूस्खलन को लेकर जांच-समित का गठन किया गया था। यह बात उसी समय सामने आ गई थी कि हिमालयी जलवायु के खिलाफ हो रहे अनियोजित निर्माण की वजह से जोशीमठ को काफी नुकसान पहुंच चुका है। लेकिन, विकास का परिपत्र जारी कर आगे बढ़ चुकी सरकारों ने मिश्रा समिति की सिफारिशों के खिलाफ ही हर कदम उठाया जो जोशमीठ के विनाश की राह चौड़ी करने लगा।

खासकर विष्णुगाड़ में तपोवन जलविद्युत परियोजना को जोशीमठ के लिए बड़ा खलनायक साबित होने की आशंका जताई गई थी। जोशीमठ की संरचना परतदार चट्टानों से बनी है। विस्फोटकों का अत्यधिक इस्तेमाल इनकी परतों को अलग कर सकता है। इन सब तकनीकी और वैज्ञानिकी बातों को नजरअंदाज कर जोशीमठ को पर्यटकों के लिए ज्यादा से ज्यादा आसान बनाने की कोशिश की गई। जोशीमठ बदरीनाथ और हेमकुंड साहिब का प्रवेश द्वार है। उसके ऊपर औली को राजस्व का स्वर्ग बनाने के लिए पर्यटकों का कृत्रिम स्वर्ग बनाया जा रहा है। वहां कृत्रिम बर्फ जैसी चीजें अभी से आगाह कर रही हैं कि अभी भी और आगे बढ़ने से रुक जाना चाहिए।

आम तौर पर दुनिया की ज्यादातर सभ्यताओं का विकास नदी किनारे ही हुआ। नदियों के किनारे बसे मैदानी इलाकों की सभ्यताओं को अपने जीवन-यापन के लिए कड़ा संघर्ष नहीं करना पड़ता था। इन जगहों पर बीज बिखेर देने भर से फसल लहलहा उठती थी। आसान जिंदगी जीने वाली मैदानी सभ्यताओं ने कष्ट का महत्व समझने के लिए तीर्थ और तपस्या को अपनाया। कष्ट को ही मोक्ष का द्वार माना गया। लोग तीर्थ और तपस्या के लिए जीवन के उत्तरार्द्ध में जाते थे, गृहस्थ-जीवन की जिम्मेदारी पूरी होने के बाद। संतान का विवाह कर उन्हें गृहस्थी की जिम्मेदारी सौंप कर निकलते थे पहाड़ की ओर। नश्वर शरीर का ईश्वर से मिलन आसान कैसे हो सकता है। दुर्गम रास्तों से बदरीनाथ या केदारनाथ तक पहुंचने में नश्वर शरीर नष्ट हुआ तो उसे ईश्वर प्राप्ति के लिए मोक्ष माना जाता था।

धीरे-धीरे मैदान के लोगों ने पहाड़ पर बसे तीर्थ की राह को आसान बनाना शुरू कर दिया। अब जीवन के उत्तरार्द्ध में नहीं जीवन की शुरुआत में लोग मनोरंजन के लिए वहां जाते हैं। पहले लोग संतान की शादी करने के बाद जाते थे तो अब शादी के बाद मधुमास के लिए पहाड़ पसंदीदा जगह होती है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने कर्मचारियों के लिए पहाड़ों के होटलों की आकर्षक योजनाएं लेती हैं। तीर्थ की जगह पर लोग दफ्तर से मिले अवकाश का उत्सव मनाने के लिए जुटे होते हैं। सप्ताहांत की छुट्टी दो दिनों की होती है, इसके साथ एक-दो-दिन की और छुट्टी लेकर जल्दी दिल्ली और अन्य शहरों की ओर लौटना भी तो है। इसलिए पहाड़ को काट कर समतल सड़क और मैदानी लोगों के लिए होटल और विलासी आश्रयस्थल बनाने की होड़ है। जिन पहाड़ों से निकली नदियों से मैदान में पानी पहुंचा, सभ्यता के बीज फूटे वहां अब प्लास्टिक की नलियों से पानी पहुंचाया जा रहा है।

मैदान के सैलानियों की पसंदीदा शिमला का यह हाल हो चुका है कि गर्मी में मैदान की तरह गर्म हवा चलने लगी है। होटलों के साथ अब आम घरों में भी वातानुकूलित संयंत्र लगने शुरू हो गए हैं। सत्ता और मैदानी समाज ने शिमला के संकट से भी अभी तक आंखें मूंद रखी हैं।

सभ्यता का विकास करने वाले मैदानी लोगों के पास ही सत्ता की चाबी होती है। पहाड़ का क्या और कैसे होगा यह दिल्ली में बैठी सरकारें तय करती हैं। मैदान के चुनावों में बताया जाता है कि किस तरह पहाड़ के तीर्थ तक पहुंचने के लिए हवाईपट्टी और सड़कें बनाई गई हैं। यह चलन और जोड़ पकड़ता जा रहा है। पार्टी 'अ' ने अगर केदारनाथ पहुंचने के लिए एक सड़क बनाई तो अगले चुनाव में पार्टी 'ब' चार सड़क बनाने का वादा कर देगी। एक कहेगी आप चौबीस घंटे में पहुंच सकते हैं तो दूसरी कहेगी हमने 12 घंटे में पहुंचाने का इंतजाम कर दिया। इसका असर यह होता है कि मैदान में सप्ताहांत में हर उस सड़क पर घंटों जाम लगता है जो पहाड़ों की ओर जाती है। पिछले दिनों नए साल पर दिल्ली के रास्ते शिमला-मनाली पहुंचने के लिए लोग दस घंटे तक सड़क जाम में फंसे रहे।

मैदान के पर्यटकों ने शिमला को तो मैदानी गर्म आबोहवा दे दी है, अब इनका रुख बदरीनाथ-केदारनाथ की ओर है। पहाड़ कैसा हो यह बताने का हक पहाड़ से छीन लिया गया है। पर्यटन राजस्व का सबसे आसान जरिया है। लेकिन, 2013 में केदारनाथ में जो हुआ, क्या वह हम आसानी से भूल गए? केदारनाथ में सरकारों ने पर्यटन से जितना कमाया नहीं, उससे ज्यादा 2013 के बाढ़ और भूस्खलन में गंवा दिया।

सीमाई सुरक्षा से लगती पहाड़ी जगहों पर सड़क निर्माण की सामरिक मजबूरी समझी जा सकती है। लेकिन, हर मोड़ पर पहाड़ को काटना, पुल और सड़क का निर्माण पहाड़ों को भूसे की तरह बिखेर रहा है। जो देश केदारनाथ हादसा भूल कर पहाड़ी तीर्थस्थलों पर हवाईपट्टी और सड़क बनने के फीते कटने पर ताली बजा रहा है वह जोशीमठ की दरार की कराह को कितने दिन याद रखेगा? विकास, विकास और विकास की दिल्ली वाली परिभाषा की जुगाली कर पहाड़ जख्मी हो गए। पर्यटक तो अपने मनोरंजन के लिए दूसरी जगह खोज लेंगे, लेकिन जोशमीठ के उन लोगों का क्या होगा जिनके खेत से लेकर घर तक छिन गए। वे सरकार से बस यही कह सकते हैं-हमें बचाइए।

सम्मेद शिखर और जोशीमठ के दो उदाहरण सामने हैं। एक जगह जनता ने कह दिया कि नहीं चाहिए पर्यटकों वाली सुविधा, हम कष्ट झेल कर तप करेंगे। अब सरकार पहाड़ को बचाएगी या पहाड़ों को सरकार से बचाना है, यह तय करने का समय आ गया है। विकास वाले विपरीत मंजर देख कर भी अब नही तो कब बस करेंगे? तपस्या के लिए तप कीजिए, पैरों या पहाड़ी जानवरों के सहारे तीर्थ कीजिए, हवाईपट्टी और चौड़ी सड़कों को मैदान तक रहने दीजिए।

...पृ. १ का शेष

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

अनुक्रम

१ साइमन कमीशन के सुझाव २ विरोध और लाला लाजपत राय की मृत्यु ३ क्रान्तिकारियों द्वारा बदला ४ आयोग के सदस्य **साइमन कमीशन के सुझाव** साइमन कमीशन की रिपोर्ट में सुझाव दिया गया कि-

अ) प्रांतीय क्षेत्र में विधि तथा व्यवस्था सहित सभी क्षेत्रों में उत्तरदायी सरकार गठित की जाए।

१) केन्द्र में उत्तरदायी सरकार के गठन का अभी समय नहीं आया।

२) केंद्रीय विधान मण्डल को पुनर्गठित किया जाय जिसमें एक इकाई की भावना को छोड़कर संघीय भावना का पालन किया जाय। साथ ही इसके सदस्य परोक्ष पद्धति से प्रांतीय विधान मण्डलों द्वारा चुने जाएं

विरोध और लाला लाजपत राय की मृत्यु

कमीशन के सभी सदस्य अंग्रेज थे जो भारतीयों का बहुत बड़ा अपमान था। चौरी चौरा की घटना के बाद असहयोग आन्दोलन वापस लिए जाने के बाद आजाध्दी की लड़ाई में जो ठहराव आ गया था वह अब साइमन कमीशन के गठन की घोषणा से टूट गया। १९२७ में मद्रास में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें सर्वसम्मति से साइमन कमीशन के बहिष्कार का फैसला लिया गया जिसमें गांधी, नेहरु सभी ने इसका विरोध करने का निर्णय लिया । मुस्लिम लीग ने भी साइमन के बहिष्कार का फैसला किया। ३ फरवरी १९२८ को कमीशन भारत पहुंचा। साइमन कोलकाता लाहौर लखनऊ, विजयवाड़ा और पुणे सहित जहाँ जहाँ भी पहुंचा उसे जबर्दस्त विरोध का सामना करना पड़ा और लोगों ने उसे काले झंडे दिखाए। पूरे देश में साइमन गो बैक (साइमन वापस जाओ) के नारे गूंजने लगे। लखनऊ में हुए लाठीचार्ज में पंडित जवाहर लाल नेहरू घायल हो गए और गोविंद वल्लभ पंत अपंग। ३० अक्टूबर १९२८ को लाला लाजपत राय के नेतृत्व में साइमन का विरोध कर रहे युवाओं को बेरहमी से पीटा गया। पुलिस ने लाला लाजपत राय की छाती पर निर्ममता से लाठियां बरसाईं। वह बुरी तरह घायल हो गए और मरने से पहले उन्होंने बोला था कि "आज मेरे उपर बरसी हर एक लाठी कि चोट अंग्रेजों की ताबूत की कील बनेगी" अंततः इस कारण १७ नवंबर १९२८ को उनकी मृत्यु हो गई।

क्रान्तिकारियों द्वारा बदला

वह दिन ३० अक्टूबर १९२८ का था। संवैधानिक सुधारों की समीक्षा एवं रपट तैयार करने के लिए सात सदस्यीय साइमन कमीशन लाहौर पहुंचा। पूरे भारत में "साइमन गो बैक" के रंगभेदी नारे गूंज रहे थे। इस कमीशन के सारे ही सदस्य गोरे थे, एक भी भारतीय नहीं। लाहौर में साइमन कमीशन के विरोध में प्रदर्शन का नेतृत्व शेर-ए-पंजाब लाला लाजपत राय ने किया। नौजवान भारत सभा के क्रांतिकारियों ने साइमन विरोधी सभा एवं प्रदर्शन का प्रबंध संभाला। जहां से कमीशन के सदस्यों को निकलना था, वहां भीड़ ज्यादा थी। लाहौर के पुलिस अधीक्षक स्काट ने लाठीचार्ज का आदेश दिया और उप अधीक्षक सांडर्स जनता पर टूट पड़ा। भगत सिंह और उनके साथियों ने यह अत्याचार देखा, किन्तु लाला जी ने शांत रहने को कहा। लाहौर का आकाश ब्रिटिश सरकार विरोधी नारों से गूंज रहा था और प्रदर्शनकारियों के सिर फूट रहे थे। इतने में स्काट स्वयं लाठी से लाला लाजपत राय को निर्दयता से पीटने लगा और वह गंभीर रूप से घायल हुए। अंत में उन्होंने जनसभा में सिंह गर्जना की, मेरे शरीर पर जो लाठियां बरसाई गई हैं, वे भारत में ब्रिटिश शासन के कफन की अंतिम कील साबित होंगी। १८ दिन बाद १७ नवम्बर १९२८ को यही लाठियां लाला लाजपत राय की शहादत का कारण बनीं। भगत सिंह और उनके मित्र क्रांतिकारियों की दृष्टि में यह राष्ट्र का अपमान था, जिसका प्रतिशोध केवल **"खून के बदले खून"** के सिद्धांत से लिया जा सकता था। १० दिसम्बर १९२८ की रात को निर्णायक फैसले हुए। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, जय गोपाल, दुर्गा भाभी आदि एकत्रित हुए। भगत सिंह ने कहा कि उसे मेरे हाथों से मरना चाहिए। आजाद, राजगुरु, सुखदेव और जयगोपाल सहित भगत सिंह को यह काम सौंपा गया।

१७ दिसम्बर १९२८ को उप-अधीक्षक सांडर्स दफ्तर से बाहर निकला। उसे ही स्काट समझकर राजगुरु ने उस पर गोली चलाई, भगत सिंह ने भी उसके सिर पर गोलियां मारीं। अंग्रेज सत्ता कांप उठी। अगले दिन एक इश्तिहार भी बंट गया, लाहौर की दीवारों पर चिपका दिया गया। लिखा था-हिन्दुस्थान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन ने लाला लाजपत राय की हत्या का प्रतिशोध ले लिया है और फिर "साहिब" बने भगत सिंह गोद में बच्चा उठाए वीरांगना दुर्गा भाभी के साथ कोलकाता मेल में जा बैठे। राजगुरु नौकरों के डिब्बे में तथा साधु बने आजाद किसी अन्य डिब्बे में जा बैठे। स्वतंत्रता संग्राम के नायक नया इतिहास बनाने आगे निकल गए। कोलकाता में भगत सिंह अनेक क्रांतिकारियों से मिले। भगवती चरण

-शेष पृ. २४ पर

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

बोस का चित्र, उनके हस्ताक्षर सहित

जन्म २३ जनवरी १८६७

मृत्यु 18 अगस्त 1945 ÷उम्र 48(

आर्मी हॉस्पिटल नानमोन ब्रांच, ताइहोकू, जापानी ताइवान ÷वर्तमान में ताइपे सिटी हॉस्पिटल हेपिंग फुयू ब्रांच, ताइपे, ताइवान(

राष्टीयता भारतीय शिक्षा बीक्तएक्त ÷आनर्स(ए

शिक्षा द्राप्त की कलकक्राा विश्वविद्यालय पदवी अध्यक्ष ÷भारतीय राष्टीय कांग्रेस(÷1938(सुद्रीम कमाण्डर आजाद हिन्द फौज द्रसिद्धि कारण भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी सेनानी तथा सबसे बड़े नेता राजनैतिक पार्टी भारतीय राष्टीय कांग्रेस 1921

फॉरवर्ड ब्लॉक 1939

सुभाष चन्० बोस ÷23 जनवरी 1897–18 अगस्त 1945(भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी तथा सबसे बड़े नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए, उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिन्द फौज का गठन किया, उनके द्वारा दिया गया जय हिन्द का नारा भारत का राष्टीय नारा बन गया है। **"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा"** का नारा भी उनका था जो उस समय अत्यधिक द्रचलन में आया। ,भारतवासी उन्हें नेता जी के नाम से सम्बोधित करते हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जब नेता जी ने जापान और जर्मनी से सहायता लेने का द्रयास किया था, तो ब्रिटिश सरकार ने अपने गुप्तचरों को 1941 में उन्हें खत्म करने का आदेश दिया था। . नेता जी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने 'सुद्रीम कमाण्डर' के रूप में सेना को सम्बोधित करते हुए "दिल्ली चलो!" का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से बर्मा सहित इम्फाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया। 21 अक्टूबर 1943 को बोस ने आजाद हिंद

फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनाई जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपीन्स, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैंड सहित 11 देशो की सरकारों ने मान्यता दी थी। जापान ने अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह इस अस्थायी सरकार को दे दिए। सुभाष उन द्वीपों में गए और उनका नया नामकरण किया।

1944 को आजाद हिंद फौज ने अंग्रेजों पर दोबारा आक्रमण किया और कुछ भारतीय द्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त भी करा लिया। कोहिमा का युद्ध 4 अद्रैल 1944 से 22 जून 1944 तक लड़ा गया एक भयंकर युद्ध था। इस युद्ध में जापानी सेना को पीछे हटना पड़ा था और यही एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।. 6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम एक द्रसारण जारी किया जिसमें उन्होंने इस निर्णायक युद्ध में विजय के लिए उनका आशीर्वाद और शुभ कामनाए मांगी।. नेताजी की मृत्यु को लेकर आज भी विवाद है।. जहा जापान में द्रतिवर्ष 18 अगस्त को उनका शहीद दिवस धूमधाम से मनाया जाता है वहीं भारत में रहने वाले उनके परिवार के लोगों का आज भी यह मानना है कि सुभाष की मौत 1945 में नहीं हुई। वे उसके बाद रूस में नजरबन्द थे। यदि ऐसा नहीं है तो भारत सरकार ने उनकी मृत्यु से संबंधित दस्तावेज अब तक सार्वजनिक नहीं किए क्योंकि नेता जी की मृत्यु नहीं हुई थी। 16 जनवरी 2014 ÷गुरुवार(को कलकक्राा उच्च न्यायालय ने नेता जी के लापता होने के रहस्य से जुड़े खुफिया दस्तावेजों को सार्वजनिक करने की मांग वाली जनहित याचिका पर सुनवाई के लिए विशेष पीठ के गठन का आदेश दिया।. आजाद हिन्द सरकार के 75 वर्ष पूर्ण होने पर इतिहास में पहली बार वर्ष 2018 में भारत के द्रधानमन्त्री नरेन्० मोदी ने लाल किला पर तिरंगा फहराया। 23 जनवरी 2021 को नेताजी की 125वीं जयंती है जिसे भारत सरकार

के निर्णय के तहत पराझम दिवस के रूप में मनाया गया ।8 सितम्बर 2022 को नई दिल्ली में राजपथ, जिसका नामकरण कर्तव्यपथ किया गया है , पर नेताजी की विशाल द्रतिमा का अनावरण किया गया .

अनुझम

1 जन्म और पारिवारिक जीवन
2 शिक्षादीक्षा से लेकर आईसीएस तक का सफर
3 स्वतन्त्रता संग्राम में द्रवेश और कार्य
4 कारावास
5 यूरोप द्रवास
6 ऑस्टिौया में द्रेम विवाह
7 हरीपुरा कांग्रेस का अध्यक्ष पद
8 कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा
9 फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना
10 नजरबन्दी से पलायन
11 जर्मनी में द्रवास एवं हिटलर से मुलाकात
12 पूर्व एशिया में अभियान
13 दुर्घटना और मृत्यु की खबर

जन्म और पारिवारिक जीवन

नेताजी सुभाषचन्० बोस का जन्म 23 जनवरी सन् 1897 को ओड़िशा के कटक शहर में हिन्दू कायस्थ परिवार में हुआ था, । उनके पिता का नाम जानकीनाथ बोस और मा का नाम द्रभावती था। जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वकील थे। पहले वे सरकारी वकील थे मगर बाद में उन्होंने निजी द्रैक्टिस शुरू कर दी थी। उन्होंने कटक की महापालिका में लम्बे समय तक काम किया था और वे बंगाल विधानसभा के सदस्य भी रहे थे। अंग्रेज सरकार ने उन्हें रायबहादुर का खिताब दिया था। द्रभावती देवी के पिता का नाम गंगानारायण दक्ा था। दक्ा परिवार को कोलकाता का एक कुलीन परिवार माना जाता था। द्रभावती और जानकीनाथ बोस की कुल मिलाकर 14 सन्तानें थी जिसमें 6 बेटिया और 8 बेटे थे। सुभाष उनकी नौवीं सन्तान और पा चवें बेटे थे। अपने सभी भाइयों में से सुभाष को सबसे अधिक लगाव शरद चन्० से था। शरदबाबू द्रभावती और जानकीनाथ के दूसरे बेटे थे। सुभाष उन्हें मेजदा कहते थे। शरदबाबू की पत्नी का नाम विभावती था।

१९क्क५ का सुभाष चन्० बोस के परिवार का एक चित्र जिसमें वे सबसे दाए खड़े हैं।

शिक्षादीक्षा से लेकर आईसीएस तक का सफर

कटक के द्रोटेस्टेण्ट स्कूल से द्राइमरी शिक्षा पूर्ण कर 1909 में उन्होंने रेवेनशा कॉलेजियेट स्कूल में दाखिला लिया। कॉलेज के द्रिन्सिपल बेनीमाधव दास के व्यह्नित्व का सुभाष के मन पर अच्छा द्रभाव पड़ा। मात्र पन्०ह वर्ष की आयु में सुभाष ने विवेकानन्द साहित्य का

पूर्ण अध्ययन कर लिया था। 1915 में उन्होंने इण्टरमीडियेट की परीक्षा बीमार होने के बावजूद द्वितीय श्रेणी में उक्रीर्ण की। 1916 में जब वे दर्शनशास्त्र ÷ऑनर्स(में बीए के छात्र थे किसी बात पर द्रेसीडेंसी कॉलेज के अध्यापकों और छात्रों के बीच झगड़ा हो गया सुभाष ने छात्रों का नेतृत्व सम्हाला जिसके कारण उन्हें द्रेसीडेंसी कॉलेज से एक साल के लिये निकाल दिया गया और परीक्षा देने पर द्रतिबन्ध भी लगा दिया। 49वीं बंगाल रेजीमेण्ट में भर्ती के लिये उन्होंने परीक्षा दी किन्तु आ खें खराब होने के कारण उन्हें सेना के लिये अयोग्य घोषित कर दिया गया। किसी द्रकार स्कॉटिश चर्च कॉलेज में उन्होंने द्रवेश तो ले लिया किन्तु मन सेना में ही जाने को कह रहा था। खाली समय का उपयोग करने के लिये उन्होंने टेरीटोरियल आर्मी की परीक्षा दी और फोर्ट विलियम सेनालय में र गरूट के रूप में द्रवेश पा गये। फिर ख्याल आया कि कहीं इण्टरमीडियेट की तरह बीए में भी कम नम्बर न आ जायें सुभाष ने खूब मन लगाकर पढ़ाई की और 1919 में बीए ÷ऑनर्स(की परीक्षा द्रथम श्रेणी में उक्रीर्ण की। कलकक्ा विश्वविद्यालय में उनका दूसरा स्थान था।

पिता की इच्छा थी कि सुभाष आईसीएस बनें किन्तु उनकी आयु को देखते हुए केवल एक ही बार में यह परीक्षा पास करनी थी। उन्होंने पिता से चौबीस घण्टे का समय यह सोचने के लिये मा गा ताकि वे परीक्षा देने या न देने पर कोई अन्तिम निर्णय ले सकें। सारी रात इसी असमंजस में वह जागते रहे कि क्या किया जाये। आखिर उन्होंने परीक्षा देने का फैसला किया और 15 सितम्बर 1919 को इंग्लैण्ड चले गये। परीक्षा की तैयारी के लिये लन्दन के किसी स्कूल में दाखिला न मिलने पर सुभाष ने किसी तरह किट्स विलियम हाल में मानसिक एवं नैतिक विज्ञान की टौइपास ÷ऑनर्स(की परीक्षा का अध्ययन करने हेतु उन्हें द्रवेश मिल गया। इससे उनके रहने व खाने की समस्या हल हो गयी। हाल में एडमीशन लेना तो बहाना था असली मकसद तो आईसीएस में पास होकर दिखाना था। सो उन्होंने

1920 में वरीयता सूची में चौथा स्थान द्राप्त करते हुए पास कर ली।

इसके बाद सुभाष ने अपने बड़े भाई शरतचन्० बोस को पत्रख्9, लिखकर उनकी राय जाननी चाही कि उनके दिलो–दिमाग पर तो महर्षि दयानंद सरस्वती और महर्षि अरविन्द घोष के आदर्शों ने कब्जा कर रक्खा है ऐसे में आईसीएस बनकर वह अंग्रेजों की गुलामी कैसे कर पायेंगे? 22 अद्रैल 1921 को भारत सचिव ईक्तएसक्त मान्टेग्यू को आईसीएस से त्यागपत्र देने का पत्र लिखा। एक पत्र देशवन्धु चिक्रारंजन दास को लिखा। किन्तु अपनी मा द्रभावती का यह पत्र मिलते ही कि "पिता, परिवार के लोग या अन्य कोई कुछ भी कहे उन्हें अपने बेटे के इस फैसले पर गर्व है।" सुभाष जून 1921 में मानसिक एवं नैतिक विज्ञान में टौइपास ÷ऑनर्स(की डिग्री के साथ स्वदेश वापस लौट आये।

स्वतन्त्रता संग्राम में द्रवेश और कार्य

कोलकाता के स्वतन्त्रता सेनानी देशबंधु चिक्रारंजन दास के कार्य से द्रेरित होकर सुभाष दासबाबू के साथ काम करना चाहते थे। इंग्लैंड से उन्होंने दासबाबू को खत लिखकर उनके साथ काम करने की इच्छा द्रकट की। रवीं०नाथ ठाकुर की सलाह के अनुसार भारत वापस आने पर वे सर्वद्रथम मुम्बई गये और महात्मा गांधी से मिले। मुम्बई में गांधी मणिभवन में निवास करते थे। वहा 20 जुलाई 1921 को गा धी और सुभाष के बीच पहली मुलाकात हुई। गा धी ने उन्हें कोलकाता जाकर दासबाबू के साथ काम करने की सलाह दी। इसके बाद सुभाष कोलकाता आकर दासबाबू से मिले।

उन दिनों गा धी ने अंग्रेज सरकार के खिलाफ असहयोग आंदोलन चला रखा था। दासबाबू इस आन्दोलन का बंगाल में नेतृत्व कर रहे थे। उनके साथ सुभाष इस आन्दोलन में सहभागी हो गये। गा धी द्वारा 5 फरवरी 1922 को चौरी चौरा घटना के बाद असहयोग आंदोलन बंद कर दिया गया जिसके कारण 1922 में दासबाबू ने कांग्रेस के अन्तर्गत स्वराज पार्टी की स्थापना की। विधानसभा के अन्दर से अंग्रेज सरकार का विरोध करने के लिये कोलकाता महापालिका का चुनाव स्वराज पार्टी ने लड़कर जीता और दासबाबू कोलकाता के महापौर ÷डंलवत(बन गये। उन्होंने सुभाष को महापालिका का द्रमुख कार्यकारी अधिकारी बनाया। सुभाष ने अपने कार्यकाल में कोलकाता महापालिका का पूरा ढा चा और काम करने का तरीका ही बदल डाला। कोलकाता में सभी रास्तों के अंग्रेजी नाम बदलकर उन्हें भारतीय नाम दिये गये। स्वतन्त्रता संग्राम में द्राण न्योछावर करने वालों के परिवारजनों को महापालिका में नौकरी मिलने लगी।

बहुत जल्द ही सुभाष देश के एक महत्वपूर्ण युवा नेता बन गये। जवाहरलाल नेहरू के साथ सुभाष ने कांग्रेस के अन्तर्गत युवकों की इण्डिपेण्डेंस लीग शुरू की। 1927 में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झण्डे दिखाये। कोलकाता में सुभाष ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। साइमन कमीशन को जवाब देने के लिये कांग्रेस ने भारत का भावी संविधान बनाने का काम आठ सदस्यीय आयोग को सौंपा। मोतीलाल नेहरू इस आयोग के अध्यक्ष और सुभाष उसके एक सदस्य थे। इस आयोग ने नेहरू रिपोर्ट पेश की। 1928 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में कोलकाता में हुआ। इस अधिवेशन में सुभाष ने खाकी गणवेश धारण करके मोतीलाल नेहरू को सैन्य तरीके से सलामी दी। गा धी जी उन दिनों पूर्ण स्वराज्य की मा ग से सहमत नहीं थे। इस अधिवेशन में उन्होंने अंग्रेज सरकार से डोमिनियन स्टेटस मा गने की ठान ली थी। लेकिन सुभाषबाबू और जवाहरलाल नेहरू को पूर्ण स्वराज की मा ग से पीछे हटना मंजूर नहीं था। अन्त में यह तय किया गया कि अंग्रेज सरकार को डोमिनियन स्टेटस देने के लिये एक साल का वह्म दिया जाये। अगर एक साल में अंग्रेज सरकार ने यह मा ग पूरी नहीं की तो कांग्रेस पूर्ण स्वराज की मा ग करेगी। परन्तु अंग्रेज सरकार ने यह मा ग पूरी नहीं की। इसलिये 1930 में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ तब ऐसा तय किया गया कि 26 जनवरी का दिन स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

26 जनवरी 1931 को कोलकाता में राष्टौ ध्वज फहराकर सुभाष एक विशाल मोर्चे का नेतृत्व कर रहे थे तभी पुलिस ने उन पर लाठी चलायी और उन्हें घायल कर जेल भेज दिया। जब सुभाष जेल में थे तब गा धी जी ने अंग्रेज सरकार से समझौता किया और सब कैदियों को रिहा करवा दिया। लेकिन अंग्रेज सरकार ने भगत सिंह जैसे झन्तिकारियों को रिहा करने से साफ इन्कार कर दिया। भगत सिंह की फा सी माफ कराने के लिये गा धी जी ने सरकार से बात तो की परन्तु नरमी के साथ ऐसा बताया जाता है परंतु सत्य कुछ और ही है। सुभाष चाहते थे कि इस विषय पर गा धीजी अंग्रेज सरकार के साथ किया गया समझौता तोड़ दें। लेकिन गांधीजी अपनी ओर से दिया गया वचन तोड़ने को राजी नहीं थे। अंग्रेज सरकार अपने स्थान पर अडी रही

और भगत सिंह व उनके साथियों को फा सी दे दी गयी। भगत सिंह को न बचा पाने पर सुभाष गा धी और कांग्रेस के तरीकों से बहुत नाराज हो गये।

कारावास

1939 में सुभाषचन्० बोस का अखिल भारतीय कांग्रेस कमीटी की बैठक में आगमन अपने सार्वजनिक जीवन में सुभाष को कुल 11 बार कारावास हुआ। सबसे पहले उन्हें 16 जुलाई 1921 में छह महीने का कारावास हुआ।

1925 में गोपीनाथ साहा नामक एक झन्तिकारी कोलकाता के पुलिस अधीक्षक चार्लस टेगार्ट को मारना चाहता था। उसने गलती से अर्नेस्ट डे नामक एक व्यापारी को मार डाला। इसके लिए उसे फा सी की सजा दी गयी। गोपीनाथ को फा सी होने के बाद सुभाष फूट फूट कर रोये। उन्होंने गोपीनाथ का शव मा गकर उसका अन्तिम संस्कार किया। इससे अंग्रेज सरकार ने यह निष्कर्ष निकाला कि सुभाष ज्वलन्त झन्तिकारियों से न केवल सम्बन्ध ही रखते हैं अपितु वे उन्हें उत्प्रेरित भी करते हैं। इसी बहाने अंग्रेज सरकार ने सुभाष को गिरञतार किया और बिना कोई मुकदमा चलाये उन्हें अनिश्चित काल के लिये म्या मार के माण्डले कारागृह में बन्दी बनाकर भेज दिया।

5 नवम्बर 1925 को देशबंधु चिक्रारंजन दास कोलकाता में चल बसे। सुभाष ने उनकी मृत्यु की खबर माण्डले कारागृह में रेडियो पर सुनी। माण्डले कारागृह में रहते समय सुभाष की तबियत बहुत खराब हो गयी। उन्हें तपेदिक हो गया। परन्तु अंग्रेज सरकार ने फिर भी उन्हें रिहा करने से इन्कार कर दिया। सरकार ने उन्हें रिहा करने के लिए यह शर्त रखी कि वे इलाज के लिये यूरोप चले जायें। लेकिन सरकार ने यह स्पष्ट नहीं किया कि इलाज के बाद वे भारत कब लौट सकते हैं। इसलिए सुभाष ने यह शर्त स्वीकार नहीं की। आखिर में परिस्थिति इतनी कठिन हो गयी कि जेल अधिकारियों को यह लगने लगा कि शायद वे कारावास में ही न मर जायें। अंग्रेज सरकार यह खतरा भी नहीं उठाना चाहती थी कि सुभाष की कारागृह में मृत्यु हो जाये। इसलिये सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया। उसके बाद सुभाष इलाज के लिये डलहौजी चले गये।

1930 में सुभाष कारावास में ही थे कि चुनाव में उन्हें कोलकाता का महापौर चुना गया। इसलिए सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गयी। 1932 में सुभाष को फिर से कारावास हुआ। इस बार उन्हें अल्मोड़ा जेल में रखा गया। अल्मोड़ा जेल में उनकी तबियत फिर से खराब हो गयी। चिकित्सकों की सलाह पर सुभाष इस बार इलाज के लिये यूरोप जाने को राजी हो गये।

यूरोप द्रवास

१६३३ में शल्यझिया के बाद आस्टिौया के बादगास्तीन में स्वास्थ्य–लाभ करते हुए

सन् 1933 से लेकर 1936 तक सुभाष यूरोप में रहे। यूरोप में सुभाष ने अपनी सेहत का ख्याल रखते हुए अपना कार्य बदस्तूर जारी रखा। वहा वे इटली के नेता मुसोलिनी से मिले, जिन्होंने उन्हें भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में सहायता करने का वचन दिया। आयरलैंड के नेता डी वलेरा सुभाष के अच्छे दोस्त बन गये। जिन दिनों सुभाष यूरोप में थे उन्हीं दिनों जवाहरलाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू का ऑस्टिौया में निधन हो गया। सुभाष ने वहा जाकर जवाहरलाल नेहरू को सान्त्वना दी।

बाद में सुभाष यूरोप में विठ्ठल भाई पटेल से मिले। विठ्ठल भाई पटेल के साथ सुभाष ने मन्त्रणा की जिसे पटेल–बोस विश्लेषण के नाम से द्रसिद्धि मिली। इस विश्लेषण में उन दोनों ने गान्धी के नेतृत्व की जमकर निन्दा की। उसके बाद विठ्ठल भाई पटेल जब बीमार हो गये तो सुभाष ने उनकी बहुत सेवा की। मगर विठ्ठल भाई पटेल नहीं बचे, उनका निधन हो गया।

विठ्ठल भाई पटेल ने अपनी वसीयत में अपनी सारी सम्पक्रि सुभाष के नाम कर दी। मगर उनके निधन के पश्चात् उनके भाई सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इस वसीयत को स्वीकार नहीं किया। सरदार पटेल ने इस वसीयत को लेकर अदालत में मुकदमा चलाया। यह मुकदमा जीतने पर सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपने भाई की सारी सम्पक्रि गान्धी के हरिजन सेवा कार्य को भेंट कर दी।

1934 में सुभाष को उनके पिता के मृत्युशञ्या पर होने की खबर मिली। खबर सुनते ही वे हवाई जहाज से कराची होते हुए कोलकाता लौटे। यद्यपि कराची में ही उन्हे पता चल गया था कि उनके पिता की मृक्रयु हो चुकी है फिर भी वे कोलकाता गये। कोलकाता पहु चते ही अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरञतार कर लिया और कई दिन जेल में रखकर वापस यूरोप भेज दिया।

ऑस्टिौया में द्रेम विवाह

सन् 1934 में जब सुभाष ऑस्टिौया में अपना इलाज कराने हेतु ठहरे हुए थे उस समय उन्हें अपनी पुस्तक लिखने हेतु एक अंग्रेजी जानने वाले टाइपिस्ट की आवश्यकता हुई। उनके एक मित्र ने एमिली शेंकल ‐ः म्उपसपमैबीमदास(नाम की एक ऑस्टियन महिला से उनकी मुलाकात करा दी। एमिली के

पिता एक द्रसिद्ध पशु चिकित्सक थे। सुभाष एमिलीख 10, की ओर आकर्षित हुए और उन दोनों में स्वाभाविक द्रेम हो गया। नाजी जर्मनी के सख्त कानूनों को देखते हुए उन दोनों ने सन् 1942 में बाड गास्टिन नामक स्थान पर हिन्दू पद्धति से विवाह रचा लिया। वियेना में एमिली ने एक पुत्री को जन्म दिया। सुभाष ने उसे पहली बार तब देखा जब वह मुश्किल से चार सप्ताह की थी। उन्होंने उसका नाम अनिता बोस रखा था। अगस्त 1945 में ताइवान में हुई तथाकथित विमान दुर्घटना में जब सुभाष की मौत हुई, अनिता पौने तीन साल की थी।ख1,ख2, अनिता अभी जीवित है। उसका नाम अनिता बोस फाफ Anita Bose है। अपने पिता के परिवार जनों से मिलने अनिता फाफ कभी–कभी भारत भी आती है।

हरीपुरा कांग्रेस का अध्यक्ष पद

नेताजी सुभाष चन्० बोस, महात्मा गान्धी के साथ हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में ÷सन् 1938(उन दोनों के बीच राजेन्० द्रसाद और नेताजी के वायें सरदार बल्लभ भाई पटेल भी दिख रहे हैं।

1938 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हरिपुरा में होना तय हुआ। इस अधिवेशन से पहले गान्धी जी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए सुभाष को चुना। यह कांग्रेस का 51 वा अधिवेशन था। इसलिए कांग्रेस अध्यक्ष सुभाष चन्० बोस का स्वागत 51 बैलों द्वारा खींचे हुए रथ में किया गया।

इस अधिवेशन में सुभाष का अध्यक्षीय भाषण बहुत ही द्रभावी हुआ। किसी भी भारतीय राजनीतिक व्यह्नि ने शायद ही इतना द्रभावी भाषण कभी दिया हो। अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में सुभाष ने योजना आयोग की स्थापना की। जवाहरलाल नेहरू इसके पहले अध्यक्ष बनाये गये। सुभाष ने बंगलौर में मशहूर वैज्ञानिक सर विश्वेश्वरऽया की अध्यक्षता में एक विज्ञान परिषद की स्थापना भी की।

1937 में जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया। सुभाष की अध्यक्षता में कांग्रेस ने चीनी जनता की सहायता के लिये डॉ० द्वारकानाथ कोटनिस के नेतृत्व में चिकित्सकीय दल भेजने का निर्णय लिया। आगे चलकर जब सुभाष ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में जापान से सहयोग किया तब कई लोग उन्हे जापान की कठपुतली और फासिस्ट कहने लगे। मगर इस घटना से यह सिद्ध होता हैं कि सुभाष न तो जापान की कठपुतली थे और न ही वे फासिस्ट विचारधारा से सहमत थे।

कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा

1938 में गांधीजी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए सुभाष को चुना तो था मगर उन्हें सुभाष की कार्यपद्धति पसन्द नहीं आयी। इसी दौरान यूरोप में द्वितीय विश्वयुद्ध के बादल छा गए थे। सुभाष चाहते थे कि इंग्लैंड की इस कठिनाई का लाभ उठाकर भारत का स्वतन्त्रता संग्राम अधिक तीव्र किया जाये। उन्होंने अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में इस ओर कदम उठाना भी शुरू कर दिया था परन्तु गांधीजी इससे सहमत नहीं थे।

1939 में जब नया कांग्रेस अध्यक्ष चुनने का समय आया तब सुभाष चाहते थे कि कोई ऐसा व्यह्नि अध्यक्ष बनाया जाये जो इस मामले में किसी दबाव के आगे बिल्कुल न झुके। ऐसा किसी दूसरे व्यह्नि के सामने न आने पर सुभाष ने स्वयं कांग्रेस अध्यक्ष बने रहना चाहा। लेकिन गान्धी उन्हें अध्यक्ष पद से हटाना चाहते थे। गान्धी ने अध्यक्ष पद के लिये पन्नाभि सीतारमैया को चुना। कविवर रवीन्०नाथ ठाकुर ने गान्धी को पत्र लिखकर सुभाष को ही अध्यक्ष बनाने का निवेदन किया। द्रफुल्लचन्० राय और मेघनाद साहा जैसे वैज्ञानिक भी सुभाष को ही फिर से अध्यक्ष के रूप में देखना चाहते थे। लेकिन गान्धीजी ने इस मामले में किसी की बात नहीं मानी। कोई समझौता न हो पाने पर बहुत बरसों बाद कांग्रेस पार्टी में अध्यक्ष पद के लिये चुनाव हुआ।

सब समझते थे कि जब महात्मा गान्धी ने पन्नाभि सीतारमैऽया का साथ दिया है तब वे चुनाव आसानी से जीत जायेंगे। लेकिन वास्तव में सुभाष को चुनाव में 1580 मत और सीतारमैऽया को 1377 मत मिले। गान्धीजी के विरोध के बावजूद सुभाषबाबू 203 मतों से चुनाव जीत गये। मगर चुनाव के नतीजे के साथ बात खत्म नहीं हुई। गान्धीजी ने पन्नाभि सीतारमैऽया की हार को अपनी हार बताकर अपने साथियों से कह दिया कि अगर वें सुभाष के तरीकों से सहमत नहीं हैं तो वें कांग्रेस से हट सकतें हैं। इसके बाद कांग्रेस कार्यकारिणी के 14 में से 12 सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया। जवाहरलाल नेहरू तटस्थ बने रहे और अकेले शरदबाबू सुभाष के साथ रहे।

1939 का वार्षिक कांग्रेस अधिवेशन त्रिपुरी में हुआ। इस अधिवेशन के समय सुभाषबाबू तेज बुखार से इतने बीमार हो गये थे कि उन्हें स्टौचर पर लिटाकर अधिवेशन में लाना पड़ा। गान्धीजी स्वयं भी इस अधिवेशन में उपस्थित नहीं रहे और उनके साथियों ने भी सुभाष को कोई सहयोग नहीं दिया। अधिवेशन के बाद सुभाष ने समझौते के लिए बहुत कोशिश की लेकिन गान्धीजी और उनके साथियों ने उनकी एक न मानी। परिस्थिति ऐसी बन गयी

कि सुभाष कुछ काम ही न कर पाये। आखिर में तंग आकर 29 अप्रैल 1939 को सुभाष ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया।

फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना

3 मई 1939 को सुभाष ने कांग्रेस के अन्दर ही फॉरवर्ड ब्लॉक के नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की। कुछ दिन बाद सुभाष को कांग्रेस से ही निकाल दिया गया। बाद में फॉरवर्ड ब्लॉक अपने आप एक स्वतन्त्र पार्टी बन गयी। द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू होने से पहले से ही फॉरवर्ड ब्लॉक ने स्वतन्त्रता संग्राम को और अधिक तीव्र करने के लिये जन जागृति शुरू की।

3 सितम्बर 1939 को म०ास में सुभाष को ब्रिटेन और जर्मनी में युद्ध छिड़ने की सूचना मिली। उन्होंने घोषणा की कि अब भारत के पास सुनहरा मौका है उसे अपनी मुह्नि के लिये अभियान तेज कर देना चहिये। 8 सितम्बर 1939 को युद्ध के द्रति पार्टी का रुख तय करने के लिये सुभाष को विशेष आमन्त्रित के रूप में का ग्रेस कार्य समिति में बुलाया गया। उन्होंने अपनी राय के साथ यह संकल्प भी दोहराया कि अगर का ग्रेस यह काम नहीं कर सकती है तो फॉरवर्ड ब्लॉक अपने दम पर ब्रिटिश राज के खिलाफ युद्ध शुरू कर देगा।

अगले ही वर्ष जुलाई में कलकक्रा स्थित हालवेट स्तम्भख3, जो भारत की गुलामी का प्रतीक था सुभाष की यूथ ब्रिगेड ने रातोंरात वह स्तम्भ मिन्नी में मिला दिया। सुभाष के स्वयंसेवक उसकी नींव की एक–एक ईंट उखाड़ ले गये। यह एक द्रतीकात्मक शुरुआत थी। इसके माध्यम से सुभाष ने यह सन्देश दिया था कि जैसे उन्होंने यह स्तम्भ धूल में मिला दिया है उसी तरह वे ब्रिटिश साम्राज्य की भी ईंट से ईंट बजा देंगे।

इसके परिणामस्वरूप अंग्रेज सरकार ने सुभाष सहित फॉरवर्ड ब्लॉक के सभी मुख्य नेताओं को कैद कर लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सुभाष जेल में निष्क्रिय रहना नहीं चाहते थे। सरकार को उन्हें

रिहा करने पर मजबूर करने के लिये सुभाष ने जेल में आमरण अनशन शुरू कर दिया। हालत खराब होते ही सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया। मगर अंग्रेज सरकार यह भी नहीं चाहती थी कि सुभाष युद्ध के दौरान मुह्म रहें। इसलिये सरकार ने उन्हें उनके ही घर पर नजरबन्द करके बाहर पुलिस का कड़ा पहरा बिठा दिया।

नजरबन्दी से पलायन

कलकक्रा ÷वर्तमान कोलकाता(स्थित नेताजी भवन जहा से सुभाष चन्० बोस वेश बदल कर फरार हुए थे। इस घर में अब नेताजी रिसर्च ब्यूरो स्थापित कर दिया गया है। भवन के बाहर लगे होर्डिंग पर सैनिक कमाण्डर वेष में नेताजी का चित्र साफ दिख रहा है।

नजरबन्दी से निकलने के लिये सुभाष ने एक योजना बनायी। 16 जनवरी 1941 को वे पुलिस को चकमा देते हुए एक पठान मोहम्मद जियाउद्धीन के वेश में अपने घर से निकले। शरदबाबू के बड़े बेटे शिशिर ने उन्हे अपनी गाड़ी से कोलकाता से दूर झारखंड राज्य के धनबाद जिले ÷गोमोह(तक पहु चाया। गोमोह रेलवे स्टेशन÷वर्तमान में नेता जी सुभाष चं० बोस जंक्शन, गोमोह(से श्ण्टियर मेल पकड़कर वे पेशावर पहु चे। पेशावर में उन्हें फॉरवर्ड ब्लॉक के एक सहकारी, मिया अकबर शाह मिले। मिया अकबर शाह ने उनकी मुलाकात, किर्ती किसान पार्टी के भगतराम तलवार से करा दी। भगतराम तलवार के साथ सुभाष पेशावर से अफगानिस्तान की राजधानी काबुल की ओर निकल पड़े। इस सफर में भगतराम तलवार रहमत खान नाम के पठान और सुभाष उनके गू गे–बहरे चाचा बने थे। पहाड़ियों में पैदल चलते हुए उन्होंने यह सफर पूरा किया।

काबुल में सुभाष दो महीनों तक उक्रामचन्द मल्होत्रा नामक एक भारतीय व्यापारी के घर में रहे। वहा उन्होने पहले रूसी दूतावास में द्रवेश पाना चाहा। इसमें नाकामयाब रहने पर उन्होने जर्मन और इटालियन दूतावासों में द्रवेश पाने की कोशिश की। इटालियन दूतावास में उनकी कोशिश सफल रही। जर्मन और

इटालियन दूतावासों ने उनकी सहायता की। आखिर में आरलैण्डो मैजोन्टा नामक इटालियन व्यक्ति बनकर सुभाष काबुल से निकलकर रूस की राजधानी मास्को होते हुए जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहु चे।

कोलकाता स्थित नेताजी भवन में रखी कार जिसमें बैठकर सुभाष चन्० बोस घर से फरार हुए

जर्मनी में द्रवास एवं हिटलर से मुलाकात

बर्लिन में सुभाष सर्वद्रथम रिबेन टौप जैसे जर्मनी के अन्य नेताओं से मिले। उन्होंने जर्मनी में भारतीय स्वतन्त्रता संगठन और आजाद हिन्द रेडियो की स्थापना की। इसी दौरान सुभाष नेताजी के नाम से जाने जाने लगे। जर्मन सरकार के एक मन्त्री एडॅम फॉन टौंट सुभाष के अच्छे दोस्त बन गये।

आखिर 29 मई 1942 के दिन, सुभाष जर्मनी के सर्वोच्च नेता एडॉल्फ हिटलर से मिले। लेकिन हिटलर को भारत के विषय में विशेष रुचि नहीं थी। उन्होने सुभाष को सहायता का कोई स्पष्ट वचन नहीं दिया।

जर्मनी के हेनरिक हिमलर से चर्चारत सुभाष चन्० बोस ÷१६४२(

कई साल पहले हिटलर ने माईन काम्फ नामक आत्मचरित्र लिखा था। इस किताब में उन्होने भारत और भारतीय लोगों की बुराई की थी। इस विषय पर सुभाष ने हिटलर से अपनी नाराजगी व्यक्त की। हिटलर ने अपने किये पर माफी मा गी और माईन काम्फ के अगले संस्करण में वह परिच्छेद निकालने का वचन दिया।

अन्त में सुभाष को पता लगा कि हिटलर और जर्मनी से उन्हें कुछ और नहीं मिलने वाला है। इसलिये 8 मार्च 1943 को जर्मनी के कील बन्दरगाह में वे अपने साथी आबिद हसन सफरानी के साथ एक जर्मन पनडुब्बी में बैठकर पूर्वी एशिया की ओर निकल गये। वह जर्मन पनडुब्बी उन्हें हिन्द महासागर में मैडागास्कर के किनारे तक लेकर गयी। वहा वे दोनों समु० में तैरकर जापानी पनडुब्बी तक पहु चे। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय किन्हीं भी दो देशों की नौसेनाओं की पनडुब्बियों के द्वारा नागरिकों की यह एकमात्र अदला–बदली हुई थी। यह जापानी पनडुब्बी उन्हें इंडोनेशिया के पादांग बन्दरगाह तक पहु चाकर आयी।

पूर्व एशिया में अभियान

आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति सुभाष चन्० बोस अपने पूर्ण सैनिक वेश में ÷इस चित्र के निर्माता हैं, श्री देवादित्य चटर्जी(

पूर्वी एशिया पहु चकर सुभाष ने सर्वद्रथम वयोवृद्ध झन्तिकारी रास बिहारी बोस से भारतीय स्वतन्त्रता परिषद का नेतृत्व स भाला। सिंगापुर के एडवर्ड पार्क में रासबिहारी ने स्वेच्छा से स्वतन्त्रता परिषद का नेतृत्व सुभाष को सौंपा था।

जापान के द्रधानमन्त्री जनरल हिदेकी तोजो ने नेताजी के व्यक्तित्व से द्रभावित होकर उन्हें सहयोग करने का आश्वासन दिया। कई दिन पश्चात् नेताजी ने जापान की संसद ÷डायट(के सामने भाषण दिया।

टोक्यो में सुभाष चं० बोस, 1943

21 अक्टूबर 1943 के दिन नेताजी ने सिंगापुर में आर्जी–हुकूमते–आजाद–हिन्द ÷स्वाधीन भारत की अन्तरिम सरकार(की स्थापना की। वे खुद इस सरकार के राष्टौपति, द्रधानमन्त्री और युद्धमन्त्री बने। इस सरकार को कुल नौ देशों ने मान्यता दी। नेताजी आजाद हिन्द फौज के द्रधान सेनापति भी बन गये।

आजाद हिन्द फौज में जापानी सेना ने अंग्रेजों की फौज से पकड़े हुए भारतीय युद्धबन्दियों को भर्ती किया था। आजाद हिन्द फौज में औरतों के लिये झा सी की रानी रेजिमेंट भी बनायी गयी।

पूर्वी एशिया में नेताजी ने अनेक भाषण देकर वहा के स्थायी भारतीय लोगों से आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने और उसे आर्थिक मदद देने का आव्हान किया। उन्होंने अपने आव्हान में यह सन्देश भी दिया – "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दू गा।"

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान आजाद हिन्द फौज ने जापानी सेना के सहयोग से भारत पर आझमण किया। अपनी फौज को द्रेरित करने के लिये नेताजी ने " दिल्ली चलो" का नारा दिया। दोनों फौजों ने अंग्रेजों से अंदमान और निकोबार द्वीप जीत लिये। यह द्वीप आर्जी–हुकूमते–आजाद–हिन्द के अनुशासन में रहे। नेताजी ने इन द्वीपों को "शहीद द्वीप" और "स्वराज द्वीप" का नया नाम दिया। दोनों फौजों ने मिलकर इंफाल और कोहिमा पर आझमण किया। लेकिन बाद में अंग्रेजों का पलड़ा भारी पड़ा और दोनों फौजों को पीछे हटना पड़ा।

जब आजाद हिन्द फौज पीछे हट रही थी तब जापानी सेना ने नेताजी के भाग जाने की व्यवस्था की। परन्तु नेताजी ने झा सी की रानी रेजिमेंट की लड़कियों के साथ सैकड़ों मील चलते रहना पसन्द किया। इस द्रकार नेताजी ने सच्चे नेतृत्व का एक आदर्श द्रस्तुत किया।

6 जुलाई 1944 को आजाद हिन्द रेडियो पर अपने भाषण के माध्यम से गान्धीजी को सम्बोधित करते हुए नेताजी ने जापान से सहायता लेने का अपना कारण और आर्जी–हुकूमते–आजाद–हिन्द तथा आजाद हिन्द फौज की स्थापना के उद्धेश्य के बारे में बताया। इस भाषण के

दौरान नेताजी ने गान्धीजी को राष्टैपिता कहा तभी गांधीजी ने भी उन्हे नेताजी कहा।

दुर्घटना और मृत्यु की खबर

मुख्य लेखः सुभाष चन्० बोस की मृत्यु जापान के टोकियो शहर में रैंकोजी मन्दिर के बाहर लगी नेताजी सुभाष चन्० बोस की द्रतिमा द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान की हार के बाद, नेताजी को नया रास्ता ढू ढना जरूरी था। उन्होने रूस से सहायता मा गने का निश्चय किया था। 18 अगस्त 1945 को नेताजी हवाई जहाज से मंचूरिया की तरफ जा रहे थे।

इस सफर के दौरान वे लापता हो गये। इस दिन के बाद वे कभी किसी क ा ` दिखायी नहीं दिये।

2 3 अगस्त 1945 को टोकियो रेडियो ने बताया कि सैंगोन में नेताजी एक बड़े बमवर्षक विमान से आ रहे थे कि 18 अगस्त को ताइहोकू ÷जापानी भाषा ज्पीवान ज्मपावान क्पहांन(हवाई अड्डे के पास उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में उनके साथ सवार जापानी जनरल शोदेई, पाइलेट तथा कुछ अन्य लोग मारे गये। नेताजी गम्भीर रूप से जल गये थे। उन्हें ताइहोकू सैनिक अस्पताल ले जाया गया जहा उन्होंने दम तोड़ दिया। कर्नल हबीबुर्रहमान के अनुसार उनका अन्तिम संस्कार ताइहोकू में ही कर दिया गया। सितम्बर के मध्य में उनकी अस्थिया संचित करके जापान की राजधानी टोकियो के रैंकोजी मन्दिर में रख दी गयीं। 16, भारतीय राष्टौीय अभिलेखागार से द्राप्त दस्तावेज के अनुसार नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताइहोकू के सैनिक अस्पताल में रात्रि 21.00 बजे हुई थी।, स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत सरकार ने इस घटना की जा च करने के लिये 1956 और 1977 में दो बार आयोग नियुह्म किया। दोनों बार यह नतीजा निकला कि नेताजी उस विमान दुर्घटना में ही शहीद हो गये।

1999 में मनोज कुमार मुखर्जी के नेतृत्व में तीसरा आयोग बनाया गया। 2005 में ताइवान सरकार ने मुखर्जी आयोग को बता दिया कि 1945 में ताइवान की भूमि पर कोई हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हुआ ही नहीं था। 2005 में मुखर्जी आयोग ने भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट पेश की जिसमें उन्होंने कहा कि नेताजी की मृत्यु उस विमान दुर्घटना में होने का कोई सबूत नहीं हैं। लेकिन भारत सरकार ने मुखर्जी आयोग की रिपोर्ट को अस्वीकार कर दिया।

18 अगस्त 1945 के दिन नेताजी कहा लापता हो गये और उनका आगे क्या हुआ यह भारतीय इतिहास का सबसे बड़ा अनुक्रारित रहस्य बन गया हैं।

देश के अलग–अलग हिस्सों में आज भी नेताजी को देखने और मिलने का दावा करने वाले लोगों की कमी नहीं है। फैजाबाद के गुमनामी बाबा से लेकर छक्रीसगढ़ राज्य में जिला रायगढ़ तक में नेताजी के होने का ` ले`कर कई दावे पेश किये गय` लेकिन इन सभी क ी द्रामाणिक्ता संदिग्ध है। छक्रीसगढ़ में तो सुभाष च न्० बोस के होने का मामला राज्य सरकार तक गया। परन्तु राज्य सरकार ने इसे हस्तक्षेप के योग्य न मानते हुए मामले की फाइल ही बन्द कर दी।

सुनवाई के लिये विशेष पीठ का गठन

कलकक्रा हाई कोर्ट ने नेताजी के लापता होने के रहस्य से जुड़े खुफिया दस्तावेजों को सार्वजनिक करने की मा ग पर सुनवाई के लिये स्पेशल बेंच के गठन का आदेश दे दिया है। यह याचिका सरकारी

मन की सेहत

भावना मासीवाल

सेहतमंद शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। इसीलिए अधिकतर लोग स्वास्थ्य की चिंता भी करते हैं और नियमित चिकित्सीय सलाह भी लेते हैं। स्वास्थ्य के प्रति लोगों की यह चिंता और सजगता मुख्य रूप से शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति ही देखी गई है। लेकिन व्यक्ति के स्वास्थ्य का सबसे महत्त्वपूर्ण और जरूरी हिस्सा मानसिक स्वास्थ्य का होता है। विडंबना यह है कि हममें से अधिकतर लोग इसे स्वास्थ्य का हिस्सा ही नहीं मानते हैं। इस भागदौड़ और चकाचौंध की आधुनिक दुनिया में हर व्यक्ति समस्या और डर से घिरा हुआ है। उसकी कुछ समस्याएं तो शारीरिक स्वास्थ्य का हिस्सा बनकर इलाज के जरिए ठीक हो जाती हैं, मगर कुछ उसके भीतर ही भीतर मानसिक विकार का रूप लेकर अचेतन में जड़ बना लेती हैं। मनुष्य का यही अचेतन मन कुछ परिस्थितियों में व्यक्ति पर हावी हो जाता है और मानसिक द्वंद्व का कारण बन जाता है। यह द्वंद्व कभी-कभी मनुष्य का अपने प्रति हिंसात्मक व्यवहार के रूप में उभरता है तो कभी दूसरे मनुष्य के प्रति।

दरअसल, हमारा समाज मानसिक स्वास्थ्य के प्रति अभी सजग नहीं है। यही कारण है कि हमारे आसपास काम करने वाले व्यक्ति से लेकर सड़क पर चलने वाला हर दूसरा व्यक्ति मानसिक रूप से अस्वस्थ है और हम उनकी पहचान नहीं कर पाते हैं। हमारे समाज में मानसिक स्वास्थ्य को नकारात्मक भाव से और कई बार पागलपन के रूप में देखा और समझा जाता है। इसीलिए व्यक्ति खुद और उसका परिवार भी नहीं समझ पाता है कि वह मानसिक रूप से अस्वस्थ है और उसे इलाज की आवश्यकता है। जबकि यह स्थिति अति संवेदनाओं, भावनाओं और अतृप्त इच्छाओं का मानसिक विकारों के रूप में हावी होना है, जो मनुष्य को हत्या और आत्महत्या तक की स्थितियों में ला खड़ा करता है और हम सोचते रहते हैं कि एक सामान्य दिखने वाले व्यक्ति ने आत्महत्या या हत्या तक कैसे पहुंच गया! ये स्थितियां संवेदनाओं के मानसिक असंतुलन से उत्पन्न होती हैं। मानसिक असंतुलन की स्थितियां संवादहीनता के कारण और अधिक बढ़ रही हैं।

हमें बेहतर और अधिक बेहतर दिखने की प्रतिस्पर्धा ने आत्मकेंद्रित बना दिया है। आत्मकेंद्रित होने की इस प्रवृत्ति के कारण मनुष्य अपने आसपास एक दिखावटी दुनिया का निर्माण कर लेता है और दो चेहरों के साथ जीना शुरू कर देता है। एक, जिसे परिवार और समाज देख रहा है, दूसरा, उसका अपने आपसे जूझता भीतरी मन। जीवन में बदलते संघर्षों के मायनों ने भी मनुष्य के संघर्षरत जीवन को बदल दिया है। पहले बहुत अधिक न भी सही तो एक उम्र तक बच्चा स्वतंत्र और तनावमुक्त जीवन जीता था, उस पर सामाजिक, शैक्षिक और पारिवारिक दबाव कम हुआ करता था। या कह सकते हैं कि वह परिवार बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य का खयाल रखता था कि बच्चा विषम परिस्थितियों, असफलता की स्थितियों में परिवार के सहयोग से अपने आप को मानसिक दबाव से मुक्त कर लेता था।

दुनिया मेरे आगे

वर्तमान में सामान्य स्थितियां, संबंध, परिवार का ढांचा और मनुष्य बदल गया है। सामाजिक, आर्थिक दबाव ने बच्चों के पैदा होने के साथ ही उसमें अच्छा, बहुत अच्छा और सबसे अच्छा होने का भाव भर दिया है। वह इस भाव को ताउम्र अपने साथ लिए जीता है और अपनी आगे की पीढ़ी को हस्तांतरित करता है। हम मानसिक दबावों से भरे ऐसे समाज में पैदा हो रहे हैं, जहां हमारे आसपास अथाह तनावों और दबावों के घेरे हैं। बचपन से परिवार और समाज इन घेरों में प्रवेश लेने की शिक्षा तो देता है, लेकिन वह इन घेरों से बाहर निकलने की शिक्षा देना भूल जाता है। वह सफलता कैसे प्राप्त करे, यह शिक्षा अवश्य देता है, लेकिन असफलता में कैसे खुद को मानसिक रूप से मजबूत बनाए, यह नहीं सिखाता है।

आज हमारे आसपास का प्रत्येक व्यक्ति मानसिक द्वंद्व से जूझता, कभी खुद से लड़ता तो कभी दूसरों से झगड़ता देखा जा सकता है। इन्हें इलाज यानी परामर्श या काउंसलिंग और सबसे अधिक संवाद की आवश्यकता है।

आज संवादहीनता और अपनी मानसिक स्थितियों से किसी को परिचित न करा सकने की मानसिकता ही सबसे अधिक मानसिक स्वास्थ्य की समस्या को जन्म दे रही है। हम जिस प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सजग है और समय-समय पर उसका निरीक्षण और परीक्षण करवाते रहते हैं, उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य का भी करवाना चाहिए। शायद पश्चिमी देशों ने इस समस्या को समझा है। यही कारण है कि उन देशों में ज्यादातर लोग समस्या के वक्त काउंसलर के संपर्क में होते हैं। मगर भारत में अभी भी मानसिक स्वास्थ्य को समस्या के रूप में देखने की मानसिकता का ही अभाव देखने को मिलता है। आज युवाओं में रोजगार की चिंता ने उनको अपने परिवार से दूर कर दिया है। अकेलापन, प्रतिस्पर्धा और असफलता का डर उनके जीवन का संत्रास बनता जा रहा है। ऐसे में आवश्यक है कि नौकरीपेशा लोगों को अपने परिवार के साथ समय व्यतीत करने का उचित समय दिया जाए, जिससे वह अपने मानसिक द्वंद्व को अपनों से साथ साझा कर अपने मन में जन्म लेती नकारात्मक वृति का शमन कर अपने ऊपर नकारात्मकता को हावी होने से बचा सके।

जीवन जीने का नाम

संगीता सहाय

दुनिया मेरे आगे

उम्र के पचासीवें बसंत को पार करते किसी बुजुर्ग की जिंदादिली, नियमित दिनचर्या, जीवन से भरपूर जीने का अंदाज उनके आसपास के सभी लोगों को आश्चर्य से भर देता है। ऐसे ही एक परिचित बुजुर्ग इस आयु में भी नियमित योगाभ्यास करते हैं और प्रतिदिन अलसुबह दो-तीन किलोमीटर पैदल चलते हैं। अपने हमउम्र लोगों के साथ-साथ बच्चों, बुजुर्गों सभी से खूब बातें करते हैं। राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर अपनी राय रखते हैं। वे जिनसे भी बात करते हैं, उसमें काम की बातें करने के साथ-साथ सबके साथ हंसते-हंसाते हैं और बेरोकटोक अपनी मनपसंद चीजें खाते हैं। उद्यान में जाते समय उनके कंधे पर हमेशा किताबों और अखबारों का एक झोला रहता है, जिन्हें वे खुद भी पढ़ते हैं और दूसरों को पढ़ने के लिए उत्प्रेरित भी करते हैं। बड़ी बात यह कि उम्र के इस दौर में भी वे दवाइयों से कोसों दूर हैं। उनकी रचनात्मक गतिशीलता और खुशमिजाजी से भरपूर जीने का अंदाज बरबस ही लोगों को उनकी ओर खींचता है। उन जैसे तमाम लोगों का खुशगवार जीवन हम सबसे यह कहता है कि कुछ पल ठहरकर हम अपने-आप पर विचार कर लें।

जबकि इसके बरक्स आज के समय में पचास की उम्र पार करते या उससे पहले ही लोग कई छोटे-बड़े व्याधियों की गिरफ्त में आने लगते हैं। अलग-अलग प्रकार की दवाइयां जीवन का हिस्सा बनती जाती हैं। अहम बात यह कि लोग इसे ही सामान्य प्रक्रिया मानकर जीने को अभिशप्त हो जाते हैं। क्या यह स्थिति अपने-आप आती है, या फिर जाने-अनजाने हम खुद ही इसका कारण होते हैं? व्यस्तता और आधुनिकता के नाम पर लोगों की बिगड़ी जीवन-शैली, प्रकृति से लगातार दूर होते जाना, अपने आप में सिमटते जाना, बढ़ता प्रदूषण, मिलावटी भोजन, नकली दवाइयां, नशा आदि इसके अनेक कारण हो सकते हैं। पर एक बड़ा और महत्त्वपूर्ण कारण है करीब-करीब हम सभी के द्वारा लगातार अपने जीवन को बनावटी बनाते जाना। बढ़ती उम्र के साथ अनावश्यक गंभीरता का चोला पहन लेना और मौज-मस्ती और आनंद के पलों से दूर होते जाना।

आज ज्यादातर इंसान भौतिकवाद के गिरफ्त में आ चुका है। घर, गाड़ी, बंगला, तमाम ऐशो-आराम के साधन, किलो-दस किलो सोने, चांदी और अथाह संपत्ति पाने की चाह में काम के नाम पर निरंतर भागता ही जा रहा है। असीम सुख की कामना में लगातार अपने ही बुने जाल में उलझता या फंसता वह अपना वास्तविक सुख-चैन खोता जा रहा है। अपरिमित दौलत आ जाने के बाद भी व्यक्ति संतुष्ट और सुखी नहीं हो पा रहा है। बड़ी समस्या यह है कि या तो वह इन बातों को समझ नहीं रहा है या समझना ही नहीं चाहता। भ्रमित आमोद-प्रमोद और सुख की चाह में भटकते-भटकते इंसान अपने स्व का ही स्वाहा करता जा रहा है। बेशुमार सुख रूपी भ्रम का पीछा करते और अपने वर्तमान को दांव पर लगाते वह जीवन के असली 'मौज' यानी मन की शांति को ही खोता जा रहा है। इसका असर चुपचाप व्यक्ति के शरीर और मन पर कैसे और कितना पड़ता है, उसे इसका भान भी नहीं हो पाता। नतीजतन, अनगिनत बीमारियों की चपेट में आकर असमय ही बुढ़ापे और मौत को आमंत्रण दे बैठता है।

विचित्र है कि आज बहुत सारे लोगों के लिए 'समय की कमी' एक 'वेदवाक्य' बन चुका है। अपने आपको कथित रूप से शिक्षित और समझदार कहने वाले ज्यादातर लोग अधिक से अधिक व्यस्त रहकर या इसका दिखावा करने में ही अपनी अहमियत समझ रहे हैं। अपनी व्यस्तता का गौरवगान करते लोग इसी में अपनी सार्थकता समझ रहे हैं। ऐसे बनावटी जीवन में हंसी और आनंद का गुम होते जाना सहज ही है। वास्तव में 'मौज-मस्ती' मनुष्य के एकरेखीय जीवन में आनंद का प्रवाह करता है। हम इस अनुपम धरा के हिस्सा हैं, इसके अंकों ने हमें पाल-पोसकर बड़ा किया और जीवन के सुख का अमृतपान करने योग्य बनाया, इसकी अतुल्य छटाओं ने हमें अपने सान्निध्य में लिया यही इस नश्वर जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

इसलिए इंसान का पहला कर्तव्य है इसके हर पल को सानंद स्वीकारना और उसे मौज के साथ जीना। हम अपना विकास तो करें, पर साथ ही उस विकास की उपादेयता, महत्त्व पर भी विचार अवश्य करें। हमारे हर काम के मूल में मानसिक आनंद का भाव हमें निरर्थक करने से रोकेगा। वैसा काम जो हर्ष का लोप कर मानसिक संताप देता हो, हमारी सरलता और स्वाभाविकता छीन लेता हो, उसे अलविदा कह देना ही सही है। जीवन पहले है, उसके बाद ही कुछ और। समग्रता से कहें तो जीवन के लिए और जीवन के होने तक ही सब कुछ है। इसलिए उसके तमाम दुश्वारियों पर फतह पाने के लिए सहज होकर जीने और जिंदगी की 'मौज' को कायम रखना आवश्यक है, जो हंसी और खुशी की फुलझड़ियों की दीप्त आभा में छिपा है।

संगठन इंडियाज स्माइल द्वारा दायर की गयी है। इस याचिका में भारत

संघ, राष्टौीय सलाहकार परिषद, रॉ, खुफिया विभाग, द्रधानमंत्री के निजी सचिव, रक्षा सचिव, गृह विभाग और पश्चिम बंगाल सरकार सहित कई अन्य लोगों को द्रतिवादी बनाया गया है।

भारत की स्वतन्त्रता पर नेताजी का द्रभाव

कटक में सुभाष चन्० बोस का जन्मस्थान अब संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया गया है। नेताजी के नाम पर धनबाद के अंदर एक रेलवे स्टेशन, गोमो जंक्शन।

हिरोशिमा और नागासाकी के विध्वंस के बाद सारे संदर्भ ही बदल गये। आत्मसमर्पण के उपरान्त जापान चार–पा च वर्षों तक अमेरिका के पा वों तले कराहता रहा। यही कारण था कि नेताजी और आजाद हिन्द सेना का रोमहर्षक इतिहास टोकियो के अभिलेखागार में वर्षों तक पड़ा धूल खाता रहा।

नवम्बर 1945 में दिल्ली के लाल किले में आजाद हिन्द फौज पर चलाये गये मुकदमे ने नेताजी के यश में वर्णनातीत वृद्धि की और वे लोकद्रियता के शिखर पर जा पहु चे। अंग्रेजों के द्वारा किए गये विधिवत दुष्द्रचार तथा तत्कालीन द्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा सुभाष के विरोध के बावजूद सारे देश को झकझोर देनेवाले उस मुकदमे के बाद माताए अपने बेटों को 'सुभाष' का नाम देने में गर्व का अनुभव करने लगीं। घरशघर में राणा द्रताप और छत्रपति शिवाजी महाराज के जोड़ पर नेताजी का चित्र भी दिखाई देने लगा।

आजाद हिन्द फौज के माध्यम से भारत को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद करने का नेताजी का द्रयास द्रत्यक्ष रूप में सफल नहीं हो सका किन्तु उसका दूरगामी परिणाम हुआ। सन् १९४६ के नौसेना वि०ोह इसका उदाहरण है। नौसेना वि०ोह के बाद ही ब्रिटेन को विश्वास हो गया कि अब भारतीय सेना के बल पर भारत

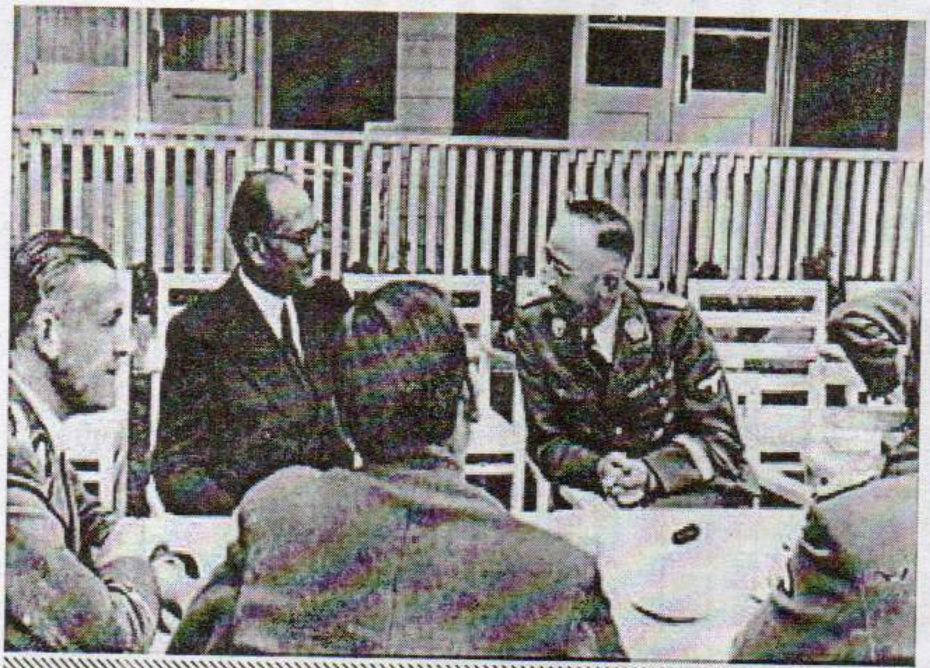

में शासन नहीं किया जा सकता और भारत को स्वतन्त्र करने के अलावा उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं बचा।

आजाद हिन्द फौज को छोड़कर विश्व–इतिहास में ऐसा कोई भी ३ष्टांत नहीं मिलता जहा तीस–पैंतीस हजार युद्धबन्दियों ने संगठित होकर अपने देश की आजादी के लिए ऐसा द्रबल संघर्ष छेड़ा हो।

जहा स्वतन्त्रता से पूर्व विदेशी शासक नेताजी की सामर्थ्य से घबराते रहे, तो स्वतन्त्रता के उपरान्त देशी सक्राधीश जनमानस पर उनके व्यह्मित्व और कर्तृत्व के अमिट द्रभाव से घबराते रहे। स्वातन्त्र्यवीर सावरकर ने स्वतन्त्रता के उपरान्त देश के झंतिकारियों के एक सम्मेलन का आयोजन किया था और उसमें अध्यक्ष के आसन पर नेताजी के तैलचित्र को आसीन किया था। यह एक झन्तिवीर द्वारा दूसरे झन्तिवीर को दी गयी अभूतपूर्व सलामी थी।

लेखन ÷एवं वाचिक(कार्य तथा द्रकाशन

अपने संघर्षपूर्ण एवं अत्यधिक व्यस्त जीवन के बावजूद नेताजी सुभाष चन्० बोस स्वाभाविक रूप से लेखन के द्रति भी उत्सुक रहे हैं। अपनी अपूर्ण आत्मकथा एक भारतीय यात्री ÷ऐन इंडियन पिलग्रिम(के अतिरिह्म उन्होंने दो खंडों में एक पूरी पुस्तक भी लिखी भारत का संघर्ष ÷द इंडियन स्टौगल(, जिसका लंदन से ही द्रथम द्रकाशन हुआ था।ख19, यह पुस्तक काफी द्रसिद्ध हुई थी। उनकी आत्मकथा यद्यपि अपूर्ण ही रही, लेकिन उसे पूर्ण करने की उनकी अभिलाषा रही थी, जिसका पता मूल पांडुलिपि के द्रथम पृष्ठ पर बनायी गयी योजना से स्पष्ट रूपेण चलता है।

इसके अतिरिह्म नेताजी ने अपने बहुआयामी स्वतंत्रता संघर्ष के संदर्भ में अगणित पत्र लिखे, भाषण दिये

एवं रेडियो के माध्यम से भी उनके व्याख्यान द्रसारित हुए। पत्रों की एक बड़ी मात्रा उनके निजी जीवन से भी सम्बद्ध है।

नेताजी संपूर्ण वा्ंमय

दिसंबर 1940 से नेताजी के अंतिम समय तक उनके पूर्ण विश्वासपात्र तथा निकट सहयोगी रहे डॉक्त शिशिर कुमार बोस ने नेताजी रिसर्च ब्यूरो की स्थापना कर नेताजी के 'समग्र साहित्य' के द्रकाशन का विशाल कार्य मुख्यतः विनोद सीक्त चौधरी के साथ मिलकर 1961 ईस्वी में आरंभ किया था 21, और 1980 में 12 खंडों में संकलित रचनाओं के द्रकाशन का काम शुरू हुआ। आरंभिक योजना 10 खंडों में 'समग्र साहित्य' के द्रकाशन की थी, परंतु बाद में यह योजना 12 खंडों की हो गयी। अद्रैल 1980 में सर्वद्रथम बांग्ला में इसके द्रथम खंड का द्रकाशन हुआ था और नवंबर 1980 में अंग्रेजी में। हिंदी में इसका द्रथम खंड 1982 में द्रकाशित हुआ और फिर इन तीनों भाषाओं में समग्र साहित्य का द्रकाशन होते रहा। इसका अंतिम ÷12वा (खंड 2011 ईक्त में छप कर आ पायाय हालांकि इसकी सामग्री पहले से ही तैयार थी। इस 'समग्र वा्ंमय' के संकलन एवं द्रकाशन कार्य से आरंभ से ही सुगत बोस भी जुड़े हुए थे और अंतिम दो खंडों का द्रकाशन डॉक्त शिशिर कुमार बोस के दुःखद निधन के कारण मुख्यतः सुगत बोस के ही संपादन में हुआ।

इस 'समग्र वा्ंमय' के द्रथम खंड में उनकी 'आत्मकथा' के साथ कुछ पत्रों का द्रकाशन हुआ है और द्वितीय खंड में उनकी सुद्रसिद्ध पुस्तक 'भारत का संघर्ष' ÷द इंडियन स्टौगल(का द्रकाशन हुआ है। फिर अन्य खंडों में उनके द्वारा लिखित पत्रों, टिप्पणियों एवं भाषणों आदि समग्र उपलब्ध साहित्य का झमबद्ध द्रकाशन हुआ है। इस द्रकार यथासंभव उपलब्ध नेताजी का लिखित एवं वाचिक 'समग्र वा्ंमय' अध्ययन हेतु सुलभ हो गया है और यह युगीन आवश्यकता भी है कि महात्मा गांधी की तरह नेताजी के सन्दर्भ में भी अनेकानेक संदर्भ–रहित कथनों एवं अपूर्ण जानकारियों के आधार पर राय कायम करने की बजाय उपयुह्म मुड्डे को उसके उपयुह्म एवं सम्यक् संदर्भों में देखते हुए सटीक एवं द्रामाणिक राय कायम की जाय। वे बहुत ही सरल थे।

इन्हें भी देखें

आजाद हिन्द फौज
कोहिमा का युद्ध नौसेना वि०ोह

रैंकोजी मन्दिर ÷जापान(
अनिता बोस फाफ एमिली शेंकल
सुभाष चन्० बोस की मृत्यु
सुभाष चन्० बोस के राजनैतिक विचार भारतीय स्वतंत्रता का झंतिकारी आन्दोलन

"नेताजी की हत्या का आदेश दिया था". बीबीसी हिन्दी. 15 अगस्त 2005. मूल से 23 मई 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 अक्टूबर 2013. "एक आयरिश इतिहासकार यूनन ओ हैल्पिन का कहना है कि जब नेताजी ने जापान और जर्मनी से मदद लेने की कोशिश की थी तो ब्रितानी सरकार ने उन्हें खत्म करने का आदेश दिया था।"

झन्त, मदनलाल वर्मा ÷2006(. स्वाधीनता संग्राम के झन्तिकारी साहित्य का इतिहास. 2 ÷1 संस्करण(. नई दिल्लीः द्रवीण द्रकाशन.पृ०512. आ इ ' ० ए स ० ब ी ० ए न ० 81-7783–120–8. मूल से 14 अह्मूबर 2013 को पुरालेखित. "मैं जानता हू कि ब्रिटिश सरकार भारत की स्वाधीनता की मा ग कभी स्वीकार नहीं करेगी। मैं इस बात का कायल हो चुका हू कि यदि हमें आजादी चाहिए तो हमें खून के दरिया से गुजरने को तैयार रहना चाहिये। अगर मुझे उम्मीद होती कि आजादी पाने का एक और सुनहरा मौका अपनी जिन्दगी में हमें मिलेगा तो मैं शायद घर छोड़ता ही नहीं। मैंने जो कुछ किया है अपने देश के लिये किया है। विश्व में भारत की द्रतिष्ठा बढ़ाने और भारत की स्वाधीनता के लक्ष्य के निकट पहु चने के लिये किया है। भारत की स्वाधीनता की आखिरी लड़ाई शुरू हो चुकी है। आजाद हिन्द फौज के सैनिक भारत की भूमि पर सफलतापूर्वक लड़ रहे हैं। हे राष्टौपिता! भारत की स्वाधीनता के इस पावन युद्ध में हम आपका आशीर्वाद और शुभ कामनायें चाहते हैं।"

"23 अगस्त 1945 को टोकियो रेडियो ने बताया कि सैगोन में नेताजी एक बड़े बमवर्षक विमान से आ रहे थे कि 18 अगस्त को ताइहोकू हवाई अड्डे के पास उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में उनके साथ सवार जापानी जनरल शोदेई, पाइलेट तथा कुछ अन्य लोग मारे गये। नेताजी गम्भीर रूप से जल गये थे। उन्हें ताइहोकू सैनिक अस्पताल ले जाया गया जहा उन्होंने दम तोड़ दिया। कर्नल हबीबुर्रहमान के अनुसार उनका अन्तिम संस्कार ताइहोकू में ही कर दिया गया। सितम्बर के मध्य में उनकी अस्थिया संचित करके टोकियो के रैंकोजी मन्दिर में रख दी गयीं।"

कामयाबी की सीढ़ियां

सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी

खुद्दारी की पहली शर्त है स्वाभिमान, लगातार उन्नति की ललक और कामयाबी के ऊंचे सपने देखने का जज्बा। जिगर मुरादाबादी ने क्या खूब कहा है- 'हमको मिटा सके ये जमाने में दम नहीं, हमसे जमाना खुद है, जमाने से हम नहीं।' यह खुद्दारी ही है, अहं और दंभ नहीं। यही बात एक कवि ने भी कही है कि 'ऊपर कुछ और ऊपर गरुड़ को जाने दो, नीले अंबर का छोर उसे छू आने दो, यह पंखों का अभिमान नहीं जिज्ञासा है।' यही जिज्ञासा बड़े काम करने के लिए प्रेरित करती है। जीवन के हर क्षेत्र में ऊंचे सपनों को मूर्तिमान करने के प्रयास में ही नए आविष्कार हुए। फिर भले ही वह उद्योग के क्षेत्र में हों या किसी नए प्रयोग करने की कोशिश में। वरना जीवन स्थिर ही बना रहता। विज्ञान ने नए साधन दिए, नए संयत्र बने और तरक्की हुई और सतत हो रही है। कल की चीज आज पुरानी हो जाती है और नई चीज की तलाश जारी रहती है। सभी के पीछे खुद्दारी ही प्रेरणा है।

असफल होना शर्म का कारण नहीं। असफलता के बाद सहमकर और हाथ पर हाथ रखकर बैठना जरूर व्यक्ति को निढाल करता है। नाकामी के बाद फिर से नई शुरुआत करने में ही सार्थकता है। कहा भी गया है- 'इस तरह तय की हैं हमने मंजिलें, गिर पड़े, गिरकर उठे, उठकर चले।' यह बहुत से कमजोर और लाचार लोगों को जीवन में संघर्ष करते हुए देखकर जाना जा सकता है। 'न मैं गिरा न मेरी उम्मीदों की मीनार गिरी, मुझे गिराने की कोशिश में कई लोग बार-बार गिरे।' ये भी कभी हार न मानने का ही जिक्र है। खुद्दार व्यक्ति न तो हार मानता है, न समझौता करता है, न झुकता है। वरना हम आदिम काल में ही होते। खेलों में भी सतत प्रयोग हुए और उन्हीं खिलाड़ियों को याद किया जाता है जिन्होंने अपनी ओर से अतिरिक्त प्रयास करके खेल को नई ऊंचाइयां दीं। यही नहीं, खेल उपकरणों में भी निरंतर नए प्रयोग हुए। हार मान कर और असफल होकर मैदान छोड़ने वालों को तो पलायन करने वाला कहा जाएगा। ऐसे लोग हैं जरूर, पर दुनिया में बडा काम करना ऐसे लोगों के बस की बात नहीं है। खुद्दार व्यक्ति ऐसा नहीं करता। आपने अनेक ऐसे लोगों के बारे में सुना होगा, जिन्होंने छोटे स्तर से प्रारंभ कर- के आकाशीय ऊंचाइयां प्राप्त कीं। चाय बेचने वाला होटल का मालिक बना, घर-घर सामान पहुंचाने वाला करोड़पति बना। तांगा चलाने वाला मसाला उद्योग का मालिक बनकर बड़ी संपत्ति का मालिक बना।

दुनिया मेरे आगे

दूसरी ओर कुछ वैसे लोग हैं जिन्हें काम के नाम से ही नफरत है। हम उन्हें आलसी, कामचोर और पड़े-पड़े सब कुछ होते हुए महज देखने वाले और दूसरों को सब कुछ करते हुए देखने पर खुद कुछ न करने का मजा लेने वाले भी कह सकते हैं। ऐसे लोग सबको सब कुछ करते हुए देखने पर खुद कुछ न करने के लिए अभिशप्त हैं। मैं एक ऐसे राजघराने से जुड़े व्यक्ति को जानता था। वे जिस करवट सोते थे, दाढ़ी बनाने वाला व्यक्ति उसी के मुताबिक दाढ़ी बनाता था। दरअसल, कुछ लोगों को यह सामाजिक पृष्ठभूमि की सुविधा मिली होती है कि उन्हें बिना काम किए जीवन की सभी सुख-सुविधाएं मिलती रहती हैं। ऐसे साधन-संपन्न लोगों के सामने बिना कुछ किए जीवन निर्वाह की सुविधा मिली होती है और वे शायद इसीलिए वे काम करने को कमतर भाव से देखते हैं।

कई साल पहले एक निबंध पढ़ा था कि आलस्य के पक्ष में कभी कुछ न करने का मजा क्या होता है। यह सब बताया गया था। यानी आलस्य के पक्ष में भी बहुत कुछ कहा गया है। पर सवाल यह है कि इस तरह अगर चौबीस घंटे व्यक्ति आलस्य में पड़ा रहे तब भी वह कभी थकेगा ही। अंग्रेजी में कहा भी गया है कि अगर पूरे साल खेलने-कूदने की मौज-मस्ती चले तो खेलना भी उतना ही ऊबाऊ होगा, जितना कि मजा करना या पढ़ना होता है। लार्ड टेनिसन ने एक काल्पनिक टापू पर रहने वाले उन लोगों की चर्चा की है, जिन्हें लोटस ईटर्स कहा जाता है और वे कभी काम न करने के लिए अभिशप्त हैं। इस कविता का मूल मंत्र है- अगर जीवन का अंत मृत्यु ही है तो काम किया ही क्यों जाए! जब काम करने वाले भी मरते हैं और काम न करने वाले भी तो काम करके मरने से अच्छा है बिना काम किए हुए मरना।

अपने-अपने तर्क हैं। टेनिसन ने एक ओर 'लोटस ईटर्स' जैसी आलस्य के पक्ष वाली कविता लिखी तो दूसरी ओर कार्य को प्रेरित करने वाली और सक्रियता का बोध कराने वाली 'उलिसस' जैसी कविता भी लिखी। ऐसा होता है। न जाने कौन-सा तर्क सुहा जाए! जीवन में एक ओर सतत प्रयास करने वाले और उत्तरोत्तर सफलता की ऊंचाइयां प्राप्त करने वाले लोग हैं जो कभी संतुष्ट होकर निढाल नहीं बैठते, तो दूसरी ओर वे लोग हैं जो कुछ करना ही नहीं चाहते। उन्होंने शायद स्वभाववश कोशिश ही नहीं की, वरना क्या मालूम वे भी कभी सफल होते। यही जिंदगी है। परस्पर विरोधी स्वभाव और आदतों से भरपूर।

स्व. श्री जगन्नाथ कपूर

बहुत कम इन्सान जगन्नाथ कपूर जैसे पैदा होते हैं जिन्होंने समाज के हर क्षेत्र में बहुत अच्छा काम किया है ।

शिक्षा का उजाला घर-घर पहुंचाने वाले स्व. जगन्नाथ कपूर जब डी.ए.वी. कॉलेज के विद्यार्थी थे तब वह प्रिन्सीपल महात्मा हंजराज और प्रोफेसर भाई परमानन्द के बहुत करीब थे और उनके दैनिक जीवन की शुरूआत आर्य समाज और डी.ए.वी. का आन्दोलन बढ़ाने और स्वतन्त्रता प्राप्ति की चर्चा महात्मा हन्सराज और भाई परमानन्द के साथ सुबह सैर के समय लाहौर में शुरू होती थी । यह आन्दोलन शिक्षा को बढ़ाना और स्वतन्त्रता को पाने का था । जगन्नाथ कपूर शहीद भगत सिंह के पिता श्री कृष्ण सिंह, जी स्वतन्त्र सेनानी और आर्य समाजी भी थे, उनके साथ आर्य समाज, लाहौर में जाते थे और जगन्नाथ कपूर लाला लाजपत राय के पड़ोस में रहते थे । लाला लाजपत राय के घर में शहीद भगत सिंह के चाचा श्री अजीत सिंह और पिता श्री कृष्ण सिंह, भगत सिंह, सुखदेव आदि प्रायः लाला जी के घर आते थे वहीं पर श्री जगन्नाथ कपूर का इन महान स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ मेल-मिलाप हो जाता था । १९२८ में जब वह १८ वर्ष के थे तो उन्होंने लाला लाजपत राय से कन्धे से कन्धा मिलाकर साईमन कमेटी लाहौर ने उन्हें २४ वर्ष की आयु का सबसे छोटा सदस्य बनाया ।

देश विभाजन के बाद लोगों को रिलीफ कमेटी के द्वारा बचाते-बचाते जगन्नाथ कपूर बहुत समय बाद अपनी जान को बचाते हुए परिवार के साथ कुरुक्षेत्र अपने मित्र चौधरी अनन्त राम के फार्म पर पहुंचे । उस समय कुरूक्षेत्र में रिफयूजियों की बहुत भीड़ थी, उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं था और रहने के लिए जगह भी नहीं थी । इन हालातों को देखते हुए उन्होंने अपनी बड़ी बहन बुद्धवन्ती देवी, चौधरी अनन्त राम और केदार नाथ साहनी के साथ रिफयूजियों को राशन प्रदान कराया और रहने के लिए टैन्ट भी लगवाए । कुछ समय बाद जे.एन. कपूर अब्दुल्लापुर गांव में बसने लगे जो आज यमुनानगर है । यहां पर लकड़ी की पेटियां बनाने का काम भी शुरू किया । जहां पर भी रिफयुजिओं की हर तरह की मदद की ।

श्री जगन्नाथ कपूर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बहुत करीब थे और उन्होंने डॉ. साहब के साथ मिलकर नई पार्टी जनसंघ बनाई । फिर जगन्नाथ कपूर ने जनसंघ की टिकट पर देश के विभाजन के बाद १९५२ में पहला चुनाव भी लड़ा । उस वक्त जनसंघ नई पार्टी थी और जगन्नाथ कपूर को अपने खर्चे पर चुनाव लड़ने से बहुत नुकसान पहुंचा । इससे पूर्व अब्दुल्लापुर गांव के आर.एस.एस. के संचालक रहकर रिफयुजियों की बहुत सेवा की ।

१९५३ में राजनीति को त्याग कर डी.ए.वी. स्कूल खोला जिसका पहला नाम भी झी.एस.एस. हाई स्कूल था । इसके बाद उन्होंने डी.ए.वी. गर्ल्ज स्कूल, डी.ए.वी. गर्ल्ज कॉलेज और दो डी.ए.वी. स्कूल कांसापुर और ससौली गांव में खोले ताकि गाँवों के लोग भी शिक्षित हो जाए । उस वक्त शिक्षा की दर लगभग २५ प्रतिशत थी और विशेषकर रिफयूजिओं और गरीबों को फ्री पढ़ाया और जमना गली से लकड़ी के व्यापारियों से दान एकत्र करके टीचरों को तनख्वाह देते थे । इस प्रकार उन्होंने राईट टू एजुकेशन सिद्धांत की पालना लगभग ६५ वर्ष पूर्व की थी जबकि सरकार ने इसके बारे में कानून कुछ समय पहले बनाया । फिर महर्षि दयानन्द अस्पताल डी.ए.वी. डेन्टल कॉलेज, डी.ए.वी. फिजियोथैरेपी और हिमाचल के सोलन में हिमाचल के लोगों की सेवा के लिए डी.ए.वी. डैंटल कॉलेज बनाया । यह समस्त डी.ए.वी. संस्थाओं का निर्माण दान एकत्र करके उन्होंने बनवाया । अब्दुल्लापुर गांव को यमुनानगर शहर और शिक्षा का केन्द्र बनवाने में श्री कपूर की अहम भूमिका रही । इसलिए डॉ. रामप्रकाश, भूतपूर्व चान्सलर कुरूकुल कांगड़ी श्री जगन्नाथ कपूर को यमुनानगर जिले का मदन मोहन मालवीय की तरह समझते थे ।

श्री जगन्नाथ कपूर ने अपनी बहन बुद्धवन्ती देवी के हिन्दी आन्दोलन में हिन्दी को राजभाषा के रूप में विकसित होने के लिए बहुत सहायता की और इसी सम्बन्ध में बुद्धवन्ती देवी गिरफ़तार भी हुई । दोनों बहन-भाई दूरदर्शी थे । हरियाणा की शुरूआत इसी हिन्दी आन्दोलन से हुई ।

१९८४ में जब देश में साम्प्रदायिक झगड़े चल रहे थे तब जगन्नाथ कपूर ने अपनी जान को खतरे में डालकर यमुनानगर और आसपास के लोगों को शान्त किया और राष्ट्र-एकता को बढ़ावा दिया ।

जगन्नाथ कपूर ने विधवाओं को सिलाई-मशीनें कई बार दिलवाई ताकि आत्मनिर्भर रह सकें और गरीब लड़कियों की शादी में भी सहायता प्रदान की ।

जगन्नाथ कपूर की विशिष्ट सेवाओं को देखते हुए डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली ने डी.ए.वी. डैन्टल कॉलेज का नाम उनके नाम जे.एन. कपूर के साथ जोड़ दिया है । हरियाणा सरकार ने उनकी सेवाओं को देखते हुए डैन्टल कॉलेज के साथ जो सड़क और चौंक है उसका नाम जे.एन. कपूर कर दिया ।

सफलता की गरिमा

-महेश परिमल

लोग अक्सर कहते हैं कि आखिर असफलता है क्या ! वास्तव में असफलता ही सफलता की पहली सीढ़ी है । यह आवश्यक नहीं कि काम करते ही पहले ही प्रयास में सफलता मिल ही जाए । अगर मिल भी जाए, तो उसे हम अनायास सफलता कहेंगे, क्योंकि इस सफलता में हमारा परिश्रम कम दिखाई देगा । बिना असफल हुए हम सफलता का सही स्वाद नहीं चख पाएंगे । सारे सफल लोगों को असफलता का पड़ाव मिला ही है, जहां वे ठहरकर अपनी नाकामी के बारे में सोंचते हैं । असफल लोगों का सामना जब भी सफलता से होगा, तो उसे सहजता से स्वीकार करेंगे । उसका सम्मान करेंगे । उसका हृदय से आभार मानेंगे ।

असफलताओं को जीवन की पून्जी मान लिया जाए तो बेहतर होगा । कई लोग असफलताओं में सफलता की खोज करते हैं । दूसरी ओर कई ऐसे भी लोग होते है, जो सफलताओं में भी अपनी कमी की तलाश करते हैं । ऐसे ही लोगों को सफलता ताकतवर बनाती है । असफल व्यक्ति के जीवन में सफल होने के शत प्रतिशत अवसर होते हैं, जब तक वह प्रयलशील बना रहे । असफल होकर हाथ खड़े कर देने का अर्थ है, युद्ध से पहले ही हार स्वीकार कर लेना । सम्माननीय किसी की सफलता नहीं बल्कि उसका संघर्ष और प्रयत्न होता है । सफल लोग कुछ नया नहीं करते, बल्कि प्रयलशील लोग जरूर एक न एक दिन कुछ नया करने की क्षमता रखते हैं । असफलता जब भी आएगी, अपने महत्त्वपूर्ण अनुभव जरूर देकर जाएगी । आत्मबल सदैव बने रहना चाहिए । हिम्मत कभी कमजोर नहीं पड़नी चाहिए । कभी-कभी गुच्छे की आखिरी चाबी ताले को खोल देती है । सफलता हमेशा रूठी नहीं रह सकती । उसे एक दिन हमारी प्रतिभा को पहचानना ही होगा ।

निरन्तरता पर एक छोटा-सा उदाहरण है । एक स्टेडियम में लोग कुछ प्रतिभागियों की शक्ति का प्रदर्शन देख रहे थे । ऐसे में एक पतला-दुबला व्यक्ति अपने बछड़े को लेकर सभी के बीच पहुंचा । वहां घोषणा की गई कि इस व्यक्ति के सीने पर बछड़ा अपने चारों पैर रख देगा और व्यक्ति को कुछ नहीं होगा । लोगों ने कहा कि यह असम्भव है । आखिर में प्रदर्शन का समय हुआ । लोग भौंचक होकर उस पतले-दुबले व्यक्ति के क्रियाकलाप देखते रहे । किस तरह से उसने बछड़े को सहलाया, उससे प्यार किया । लोगों की सांसे थम गई, जब वह ज़मीन पर लेट गया । भारी बछड़ा धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगा । पहले उसने एक पैर व्यक्ति के सीने पर रखा, फिर दूसरा, फिर तीसरा और आखिर में चौथा पैर । वह व्यक्ति अपनी सांसे रोक हुए था, पूरे बछड़े का भार उसके सीने पर था । लोग अवाक् होकर यह सब देख रहे थे । तालियों की गड़गड़ाहट के बीच लोग खड़े होकर उस व्यक्ति का अभिवादन कर रहे थे ।

आखिर यह कैसे हुआ, लोगों के लिए यह एक बड़ा सवाल था । दरअसल, उस व्यक्ति को बछड़े से खूब प्यार था । अक्सर वह उसके साथ खेलता था । खेल-खेल में बछड़ा उसके सीने पर खड़ा हो जाता था । इस प्रक्रिया में बछड़े को भी सुरक्षित खड़ा हो का अभ्यास हो गया, ताकि उसके मालिक को कोई नुकसान नहीं पहुंचे । इस खेल में दोनों को मज़ा आता था । धीरे-धीरे यह उनका रोज का खेल हो गया । इधर व्यक्ति की सहनशक्ति भी बढ़ने लगी । इस काम में रिन्तरता नहीं होती, तो वह कदापि सफल नहीं हो पाता । यहीं है निरन्तरता । पशु-पक्षियों के साथ इस तरह के कई प्रयोग इन्सानों ने किए हैं, जिससे पशु या पक्षी भी अपने व्यवहार में परिपक्वता का प्रदर्शन करते हैं । सर्कस में खतरनाक पशुओं की कलाकारी को हममें से बहुतों ने देखा होगा । आवश्यकता है उसे बारीकी से जानने और गहराई से समझने की ।

एक बार तो कोई भी सफल हो सकता है । लोग होते भी हैं । पर सही निरन्तरता से प्राप्त होती है । सफलता के लिए उसके प्रति जुनून चाहिए । उसे संभालना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना उसे पाना । कई लोग सफलता को पचा नहीं पाते, इसलिए कई गलतियां कर जाते हैं, जो बाद में उनके लिए विफलता के द्वार खोल देती है । सफल होने के लिए हमें उन महत्त्वपूर्ण सीढ़ियों का स्मरण रखना होगा, जिनकी सहायता से हम सफल हो पाए हैं । अपने संघर्ष के दिनों में जिसने भी हमें थोड़ी-सी भी सहायता की हो, उसे कभी नहीं भूलना चाहिए । वह सहायता भले ही आर्थिक न हो, पर संघर्ष के उन दिनों में अगर उसने आप से सहज होकर बातचीत ही की हो, वह भी मायने रखता हैं ।

संघर्ष करना मानव का धर्म है । विमान के लिए सबसे सुरक्षित स्थान हवाई अड्डे का हेंगर है, पर वह स्थान उसकी मन्जिल नहीं । उसकी सही पहचान हवा में उड़ते रहने में ही है । जितना अधिक विमान हवा में रहेगा, उतनी ही उसकी पहचान कायम होगी । सही योद्धा की पहचान उसके द्वारा लड़ी गई लड़ाइयां हैं । संघर्षों के बाद सफलता का स्वाद ही अलग होता है । इसलिए सफलता अवश्य प्राप्त करना चाहिए, पर संघर्षों के रास्ते से गुजरकर प्राप्त किया जाए, तो वह स्थायी होगी ।

लाचार मानवता

'क्रोध और घृणा से ऊपजते संकट' मनुष्य की अजीबो गरीब और पशु वाली प्रवृत्ति का वर्णन करने वाला था। आज मनुष्य का व्यवहार और सोच अनिश्चितता, शक, क्रोध, हिंसा और अहंकार वाला हो गया है। अमीर आदमी अपनी सारी इच्छाएं पूरी करने के बाद भी सन्तुष्ट नहीं है और गरीब आदमी अमीर बनने की चाह में क्रोध या फिर निराशा-हताशा की भावना से भरा हुआ है। आजकल मानवीय सम्बन्ध खत्म होते जा रहे हैं। छोटी-छोटी बात पर बच्चे हों या बड़े, आपे से बाहर होकर हिंसक हो जाते हैं। प्रेमी-प्रेमिका, पति-पत्नी, बाप-बेटा, मित्र आदि किसी बात से नाराज होकर दूसरे को मार कर कई-कई टुकड़े कर इधर-उधर फेंक देते हैं। ऐसा लगता है कि आजकल इन्सानियत का जनाजा निकल रहा है। मनुष्य का व्यवहार कई स्तर की विकृतियों का शिकार होता जा रहा है।

बरोजगारी, गरीवी, आसमान छूती महंगाई, परिवार चलाने का बढ़ता हुआ खर्चा, पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों में बढ़ती हुई कटुता, सरकारी कार्यालयों में बिना रिश्वत के काम का न होना, पुलिस केद्वारा अपराधियों के खिलाफ वान्छित कारवाई न करना, मालिकों का अपने नौकरों को उचित वेतन न देना और उनसे दुर्व्यवहार करना आदि बातें मनुष्य के मन में निराशा, क्रोध, हिंसा और प्रतिशोध की भावना पैदा करते हैं और मन की बात नहीं सुनाएंगे, हमारे मन का बोझ हल्का नहीं होगा, अवसाद कम नहीं होगा और मानसिक विकार पर नियन्त्रण नहीं पाया जा सकेगा।

विडंबना यह है कि जैसे-जैसे देश में विकास की चर्चा बढ़ रही है, वैसे-वैसे समाज में अवसाद में भी वृद्धि हो रही है। जब हमारे पास कुछ नहीं था, हम बहुत सुखी थे, आजकल हमारे पास सब कुछ है, लेकिन हमारे पास सच्ची खुशी नहीं है, सुकून नहीं है, परिवार में सुख-शान्ति नहीं है। चारों तरफ असहनशीलता बढ़ती जा रही है, छोटी बातों पर भी हम संयम खोने लगे हैं और मारपीट या गाली-गलौज करने लगे हैं। समझ में नहीं आता कि यह सबकुछ क्यों देखने में आ रहा है। कई बार लोगों का बर्ताव विक्षिप्तों की तरह लगने लगता है। मनोवैज्ञानिकों को समय-समय पर समाज के असन्तुष्ट लोगों की काउंसलिंग करनी चाहिए और उन्हें ठीक मार्ग पर लाने की कोशिश करनी चाहिए।

'धार्मिक कट्टरता'

शाम लाल कौशल, हरियाणा सत्ताधारी धर्म का प्रयोग करके सत्ता का सुख भोग रहे हैं या भोगने के फिराक में हैं। दरअसल, किसी भी राजनीतिक दल या नेता के लिए अपने मतदाताओं को जाल में फंसाने के लिए धर्म और आस्था से बढ़कर और कोई आसान रास्ता नहीं हो सकता। शायद इजराइल के प्रधानमन्त्री बेंजामिन नेतन्याहू को इस बात का पता चल गया है। इसीलिए कुछ महीनों के लिए सत्ता से बाहर रहने के बाद उन्होंने धर्म का सहारा लिया। अब ऐसा लगता है कि इजराइल का अगली सरकार 'धार्मिक कट्टरता' के बूते चलेगी। इसका मतलब कि फिलस्तीनियों के लिए मुश्किलों शायद एक नया दौर शुरू होने जा रहा है। ऐसी आशंका जताई जा रही है कि कट्टर लोग सत्ता के सहारे फिलस्तीनियों पर हमले और बढ़ा देंगे। यों भी ऐसी खबरें आ चुकी हैं कि रोज नए क्षेत्रों में प्रवेश करते हुए इस धारा के लोग वहां अपना कॉलोनी सैनिकों की मदद से बना रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र अपने गठन के समय से ही जिस तरह इस मामले में कुछ नहीं कर पाया, सिवा मूकदर्शक बने रहने के तो अभी भी इसमें कोई सुधार नहीं, साथ मोलभाव वाली सौदेबाजी करते हैं और उसके लिए उसे कठघरे खड़ा करते हैं ? जबकि हम बिना किसी सौदेबाजी के कॉफी, पिज्जा और अन्य वस्तुओं पर कॉफी खर्च करते हैं। वहां हम एक बार भी ऐसी चीजों की कीमत नहीं पूछते। वास्तव में हमें गरीबों का सामान खरीदकर उनकी मदद करनी चाहिए। हमें गरीबों के साथ समझदार और दयालु होना चाहिए, कन्जूस नहीं, क्योंकि उनका आशीर्वाद हमें और आपको और अमीर बना देगा। लोग जब भी ठेला वाले से कुछ भी खरीदते हैं तो हमेशा कुछ रुपया कम करने को कहते हैं, लेकिन वही लोग जब बड़े-बड़े रैस्तरां में जाते है तो पचास या सौ रुपए केवल बख्शीश में दे देते हैं। अपने आसपास जो ठेला वाले लोग होते है, उन पर भी ध्यान देना चाहिए।

नाम की सहायता

समय के अनुसार ऋतु में परिवर्तन प्रकृति का नियम है। निश्चित अवधि के बाद मौसम का बदलना स्वागतयोग्य होता है। देश में सर्दी का मौसम अपने पूरे रंग में नजर आ रहा है। चारों ओर शीतलहर का प्रकोप है। चारों ओर कोहरे का साम्राज्य स्थापित हो चुका लगता है। सर्दी का मौसम बुजुर्गों और गरीबों के लिए विशेष कष्ट-दायक होता है। बढ़ती ठंड की वजह से स्कूल और कॉलेज बन्दकर दिए गए हैं। सड़कों और बाज़ारों में सन्नाटा-सा पसर लगता है। दिहाड़ी मजदूरों को दोहरी मार झेलनी पड़ रही हैं।

श्री किरणजीत सिंह (भतीजा सरदार भगत सिंह), श्री भूपिन्द्र सिंह जौहर, डी.एवी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, एस.डी. कॉलेज सोसाइटी लाहौर, केन्द्रीय सनातन धर्म सभा उत्तर भारत, डॉ.बी.आर. अम्बेड़कर चैरिटेबल सोसाइटी आदि ने स्व. जगन्नाथ कपूर को मरणोपरान्त भारत रत्न देने की मांग की, जिससे लोगों को उनके त्याग से प्रेरणा मिल सके।

डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं, यमुनानगर के चेयरमैन विजय कपूर ने बताया कि स्व. जे.एन. कपूर कहा करते थे कि अज्ञानता सब पापों की जननी है। शिक्षा के द्वारा अज्ञानता का अन्धेरा दूर किया जा सकता है और सुशिक्षा के ज्ञान से स्वच्छ समाज का निर्माण होगा। आज विजय कपूर अपने पिता श्री जे.एन. कपूर के चरण चिन्हों पर चलते हुए निरन्तर शिक्षा प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं और लोगों को प्रेरणा देते हैं कि लोग दान दें क्योंकि शिक्षा-दान सर्वश्रेष्ठ दान है और शिक्षा के द्वारा मनुष्य को अपने पैरों पर खड़ा किया जा सकता है। विजय कपूर की पत्नी आशा कपूर भी श्री जे.एन. कपूर की विरासत की पालना कर रही है। इसके अलावा श्री जे.एन. कपूर की सुपुत्री प्रोफेसर स्वर्ण महेन्द्रू जो आर्य समाज आस्टिन अमेरिका की प्रधाना भी है, वह भी अपने पिता श्री जगन्नाथ कपूर की विरासत की पालना कर रही है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के प्रचार के अलावा जिस वक्त अपने देश भारत में कोविड के समय ऑक्सीजन कन्सट्रेटर की कमी को देखते हुए अमेरिका से प्रोफेसर स्वर्ण महेन्द्रू ने धन एकत्र करके यह मशीने भिजवाने का बहुत प्रयास किया। इसके अलावा डी.ए.वी. डैन्टल और फिजियोथैरेपी कॉलेजों को यमुनानगर में खोलने के लिए अपने पिताजी श्री जे.एन. कपूर को पूरा सहयोग दिया जिसके कारण ये संस्थाएं खुली।

ఈశ్వరుడు

(శృణ్వంతు విశ్వే అమృతస్య పుత్ర:)

అతనిని తెలుసుకునేదెట్లు ? సమ్మేదెట్లు ?

(లేఖకులు : హింది : శ్రీముని వశిష్ట ఆర్య మహారాష్ట్ర-విదర్భ (తెలుగు సేత : దేవరకొండ దత్తాత్రేయ)

ప్రపంచములో నేడు అనేక విధములైన జగడములు-వంచాయతులు-తాగాదాలు జరుగుచున్నవి. తండ్రీ-కొడుకులకు జగ దము, అన్నదమ్ములలో జగడము, సోదర- సోదరీ మణులలో జగడము, అత్త-కోదండ్లలో జగడము, ఇంటివారి-పొరుగింటి వారితో జగడము, సమాజములో పదవి, ప్రతిష్ట, ధనము, సంపత్తి కొరకు జగడము; ఒక వ్యవసాయదారునికి, మరొక వ్యవసాయదారినిత జగడము; ఒక దుకాణాదారునికి, మరొక దుకాణాదారునితో జగడము; మత మతాంతరములలో జగడము; గురువు, గురువుతో జగడము; సాధు, పంతులు గూడ ఈ జగడములకు అతీతులు కారు. రాజనీతిలో జగడములు-ఒక ముఠాకు, మరొక ముఠాతో జగడము; ఒక రాష్ట్రమునకు మరొక రాష్ట్ర ముతో జగడము; ఇంకా... మరింకా.. ఆధ్యా త్మిక క్షేత్రములో, ప్రాణము-వాణి మరియు మనస్సుతో కూడా జగడము. ఇన్ని విధము లైన జగడములలో, మరొక జగడము కూడ ఉపస్థితమైయున్నది. అదేమనగా ! ఈశ్వరుడు ఒక్కడేనా ? లేక అనేక ఈశ్వరులు ఉన్నారా యని. ఈ అనేక సంఖ్యలో, అనేక జగడ ములు. ఈశ్వరుని అస్తిత్వము మరియు అతని సత్తాను విశ్వసించని నాస్తికులతో, ఆస్థికులకు జగడము. మత మతాంతరములలో, ఈశ్వ రుని స్థానముల గురించి జగడములు. ఈ ప్రకారముగా నానా విధ జగడములు, చిక్కులు అంతర్గతములో నేటి వర్తమాన మనుష్యుడు జీవించుచున్నాడు. ఈశ్వరుడు ఒక్కడేనా ? లేక అనేకులు ఉన్నారా? ఇశ్వరుడు సర్వవ్యా పకుడా ? లేక ఒకే స్థానమందుండువాడా ? యను సందేహములతో పరస్పర జగడములు జరుగుచున్నది.

సర్వప్రథమున మనము తెలుసుకొనవలసినదేమనగా, "ఈశ్వరుని" ఈశ్వరుడని ఎందుకనెదరు ?

"య ఇష్టే సర్వ ఐశ్వర్యవాన్ వర్తతె స ఈశ్వరః" అని వాఖ్యానకారులు చెప్పుచున్నారు ఈ ప్రపంచమును మరియు సంపూర్ణ ప్రహ్మాండమును, పరమ ఐశ్వర్యముగా ధారన చేయువాడు, కావున, అనిని ఈశ్వరుడని యందురు.

ఈ వసుంధరా భూమిని చూడండి, దీనిలో జలమున్నది. ఇది సర్వ జీవులకు జీవనాధారమైయున్నది. ఈ భూగర్భములో బొగ్గగనులున్నవి. బంగారము, వెండి, రాగి, లోహము గనులున్నవి. భూగర్భములో నుండే పెట్రోలు, గ్యాస్ మొ॥ లభించు చున్నవి. ఈ భూమిపైన నానా విధములగు వృక్షములు, వనస్పతులు ఉన్నవి. ఇవి మనుష్యులకు మరియు సమస్త ప్రాణులకు జీవనా ధారములైయున్నవి. గంభీరమైన సముద్ర ములు, విశాలమైన ఆకాశము, సూర్యుడు- చంద్రుడు-గ్రహ నక్షత్రములు గూడా జీవులకు ప్రాణాధారమై సౌందర్య శీలముగా విద్యమాన మైయున్నవి. ఈ విధముగ అనేకానేక విధము లైన పరమ ఐశ్వర్యములను ధరించినవాడు కావున అతనిని ఈశ్వరుడని యనుచున్నారు.

ఇప్పుడు మనము విచారించవలసినది "ఈశ్వరుడు" ఉన్నాడా ? లేడాయని ! నేటి విజ్ఞాన యుగములో నేటి విద్యార్థులు మరియు యువావర్గము ఈశ్వరుడు-దేవుడు మొదలగునవన్నీ అసత్యములు అని ప్రచారము చేయుచున్నారు. ఇటువంటి వారి అజ్ఞానమును తొలగించుట అవసరము. పదార్థ విజ్ఞానశాస్త్రజ్ఞులు వివిధ పదార్థములను ప్రయోగశా లలో పరీక్షించి, ఆయా పదార్థముల విజ్ఞాన మును పొందుచున్నారు. అదే విధముగ "ఈశ్వరీయ వేద విజ్ఞాన శాస్త్ర" ప్రయోగశా లలో అంతకంటే అత్యుత్తమముగా ఈశ్వరుడు ఉన్నాడని సిద్ధింప జేయవచ్చును. అందుకు మూడు ప్రమాణ ములు ఉదహరింప బడుచు న్నవి. 1) ప్రత్యేక్ష ప్రమాణము, 2) అనుమాన ప్రమాణము, 3) శబ్ద ప్రమాణము.

1. ప్రత్యక్ష ప్రమాణము

వ్యాకరణ దృష్టిలో శబ్దము యొక్క యదార్థ అర్థము తెలుసుకొనబడును. సృష్టి-జగత్-విశ్వము-సంసారము. ఇవి శబ్దములు. మన మందరము ఈ సంసారములో నివసించుచున్నాము. ముఖ్యముగా ఈ శబ్దముల వాఖ్యను గమనించండి ! సృష్టి శబ్దము :- ఇది సృజ్ ధాతువు నుండి వచ్చినది. దీని అర్థము=ఉత్పన్నము చేయుట. అనగా సృజన చేయుట. అప్పుడు ఉత్పనము లేక సృజన చేయువాడు, సర్వశక్తి సంపన్నుడు ఒకడు తప్పక అవసరమైయుండును. జగత్ శబ్ద ములో గమ్ ధాతువు వున్నది. గమ్-గచ్ఛ- అనగా వెళ్లుటయను అర్థము సిద్ధమగుచున్నది "జ" అనగా జన్మించుట. జల శబ్దములో "జగ" అర్థము జన్మము. "ల" అర్థము లయము. అనగా మృత్యువు. ఏది జన్మ నుండి మృత్యు పర్యంతరము వరకు ఉండునో దానిని జలమందురు. జన్మము మరియు మృత్యువు మధ్యలోనే జీవనమున్నది. అందువలననే జలమును జీవనమందురు. అస్తు.

అదే విధముగ "జ"తో జగత్తు యొక్క జన్మము ఉత్పన్నమగును. "గమ్", "గచ్ఛ" అనగా అది వెళ్లిపోవునదియని అర్థము. ఇచ్చట తెలుసుకొను విషయమేమనగా, ఈ వెళ్లిపోవు దానిని తీసికొని వెళ్లువాడు కూడ ఒకడు కావలయును. కావలసియుండును.

"విశ్వ" శబ్దములో "వి" వినాశము మరియు శ్వ-అనగా భవిష్యత్ ఏది భవిష్యత్‌లో నష్టము కావలసియ్యుదో దానిని విశ్వ మందురు. అప్పుడు ఈ విశ్వమును భవి ష్యత్‌లో నష్టము చేయువాడు కూడా ఒకడు ఉండవలెను.

"సంసారము" "సంసార-యః సరతి ఇతి స సంసార" అనగా ఏదైతే స్థిరముగా లేకుండ చలించుచు జరుగుచున్నదో, అది సంసారము అని చెప్పబడును. అయితే జరుగుచున్న దానిని జరుపవలసినవాడు కూడా ఒకడు ఉండవలె.

ఈ విధముగా పైన ఉదహరించిన విధముగా ఈ మహత్కార్యములను నిర్వహించు మహాశక్తివంతుడైన కర్తను "ఈశ్వరు"దని యందురు. ఈశ్వరుడు ఈ వర్తమాన దృష్య-అదృష్య సృష్టిని ఉత్పన్నము చేసి, స్థితి మరియు లయము (ప్రళయము) చేయును. ఈ మూడు కార్యములు కాకుండ ఈశ్వరుడు మరొక పనిని కూడా చేయుచున్నాడు. అతడు సమస్త జీవులకు వాటి కర్మానుసారము పక్ష పాత రహితముగ న్యాయ ఫల ప్రదానము చేయును. ఈ విధముగ ఈశ్వరుడు సమస్త ప్రాణులకు తండ్రి వంటివాడు అగుట వలన అతనిని పరమ పితాయని యందురు. ఏ విధముగ అణువు కన్న పరమాణువు సూక్ష్మ ముగా నున్నదో, అదే విధముగ జీవాత్మకన్న పరమాత్మ సూక్ష్మమైయున్నది. అందువలననే అతనిని వరమాత్మయని